मार्च, 1986
वर्ष 21 ❋ अंक 9

ज्ञानामृत

मूल्य 1.50

1. माऊंट आबू ओमशान्ति भवन में ६ फरवरी को स्वर्ण जयन्ति समारोह तथा विश्वशान्ति सम्मेलन का उद्घाटन दृश्य। दीप प्रज्वलित कर रहे हैं महामहिम बसन्त राव पाटिल, राज्यपाल राजस्थान, भ्राता रोड्रिगो केरेज़ो, ओडियो, भ्राता वी.सी. पटेल, दादी प्रकाशमणि जी, भ्राता अजीत कुमार पंजा तथा भ्राता छोगालाल बकोलिया।

2. माऊंट आबू में ओमशान्ति भवन में १० फरवरी को हुए प्रात: खुले अधिवेशन में शिवबाबा का सन्देश देते हुए ब्र.कु. दादी जानकी जी।

देहली में विश्व शान्ति सम्मेलन में उद्घाटन कार्यक्रम में मंच पर (बाएं से) ग्याना के हाईकमिश्नर भ्राता स्टीव नारायण जी, दादी हृदयमोहिनी जी, भारत के संचार मंत्री भ्राता रामनिवास मिर्धा जी, विश्व न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता नगेन्द्र सिंह जी, दादी निर्मल शान्ता जी, ब्र०कु० मोहिनी जी तथा भ्राता बृजमोहन जी।

अन्तर्राष्ट्रीय रूहानी सिन्धी सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में सम्बोधित करते हुए भ्राता शर्मा जी, अध्यक्ष हुडको, देहली।

माऊंट आबू में पोलोग्राऊंड में 'स्वर्णिम युग मेले' का उद्घाटन करते हुए भ्राता छोगालाल बकोलिया, स्वायत शासन मन्त्री, राजस्थान।

स्वर्ण जयन्ति समारोह तथा विश्व शान्ति सम्मेलन के उपलक्ष्य में देश विदेश से पधारे लगभग ३००० प्रतिनिधियों ने शोभा यात्रा में भाग लिया । चित्र में विदेशों से पधारे प्रतिनिधि दिखाई दे रहे हैं ।

माऊंट आबू स्थित ओमशान्ति भवन में अन्तर्राष्ट्रीय रूहानी सिन्धी सम्मेलन के अन्तिम दिन ब्र. कु. चक्रधारी जी मुख्य ब्र. कु. बहनों को जो कि पिछले ५० वर्षों से ईश्वरीय सेवा में उपस्थित हैं टीका देते हुए ।

वसंत राव पाटिल, राज्यपाल राजस्थान के आबू रोड पर पहुचने पर ब्र. कु. रत्न-मोहिनी जी उनका स्वागत करते हुए ।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

कूटनितिज्ञ तथा राजनीतिज्ञ की कार्यशाला में मंच पर (बाएं से), ग्याना के हाई-कमिश्नर भ्राता स्टीव नारायन पानामा के राजदूत भ्राता होरेस्यो बसटेमन्टे, ब्र. कु. मोहिनी जी, भ्राता अजीत कुमार पंजा, तथा सत्य-नारायण रेड्डी।

चतुर्थ विश्व शान्ति सम्मेलन के अन्तर्गत हुई 'शान्ति और सद्भावना में संचार साधनों का योगदान' कार्यशाला में बोलते हुए ब्र.कु. करुणा जी।

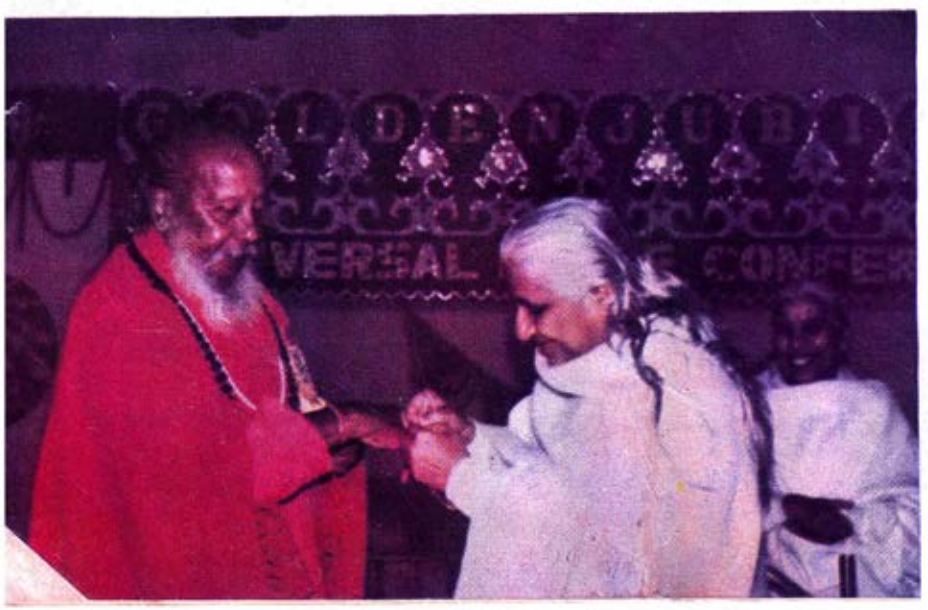

आदरणीय स्वामी वेद-व्यासानन्द सरस्वती जी ने जब ओमशान्ति भवन के मंच पर यह घोषणा की कि दादी प्रकाशमणि जी का मैं भाई हूं तो दादी प्रकाशमणि जी ने उन्हें राखी बांधी।

परमात्मा शिव

पिछले ४९ वर्षों से परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रहमा तथा अव्यक्त ब्रहमा के माध्यम द्वारा इस कलियुगी तमोगुणी सृष्टि को परिवर्तित कर नई सतयुगी सतोगुणी सृष्टि की स्थापना कर रहे हैं । कलियुगी घोर रात्रि के समय परमात्मा शिव के अवतरण की ही यादगार यह शिवरात्रि मनाई जाती है । शिव के —दिव्य अवतरण दिवस— शिवजयन्ती— शिवरात्रि पर लाख-लाख बधाई हो ।

अमृत सूची

१.	पवित्रता एवं श्रेष्ठ चरित्रयुक्त ब्रह्माकुमारी बहनों का कार्य विश्वशान्ति के लिये सर्वोपरि है	..... १
२.	स्वर्ण-जयन्ती वर्ष (सम्पादकीय)	..... २
३.	माउंट आबू में स्वर्णिम युग मेला का उद्घाटन सम्पन्न	..... ४
४.	भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वशान्ति महासम्मेलन का उदघाटन	..... ५
५.	संचार माध्यमों का विश्वशान्ति में योगदान	..... ६
६.	कार्यशाला —राजनीतिज्ञ/संसद सदस्य/विधायक	..... ७
७.	कार्यशाला —उद्योगपति एवं व्यापारी	..... ७
८.	कार्यशाला —स्वास्थ्य वैज्ञानिक	..... ८
९.	कार्यशाला —न्यायविद	..... ८
१०.	निष्काम सेवा एवं मानवमात्र के प्रति प्रेम रखने से निश्चय ही विश्व में सुख शांति आ सकती है	..... ९
११.	चतुर्थ विश्वशान्ति महासम्मेलन द्वारा मान्य प्रस्ताव	.....११
१२.	अन्तर्राष्ट्रीय रूहानी सिन्धी सम्मेलन में विश्वभर से हजारों सिन्धी प्रतिनिधि भाग लेने माउंट आबू पहुंचे	.....१३
१३.	परमात्मा के अवतरण की जरूरत	.....१५
१४.	राजयोग के वैज्ञानिक तरीके से व्यक्ति एवं समाज को तनावमुक्त करके शान्ति लानी है	.....१८
१५.	विभिन्न वर्गों के लिये आयोजित की गई कार्यशालाएं	.....१९
१६.	अब की बार (कविता)	.....२१
१७.	शुभरात्रि ! शुभरात्रि !!	.....२२
१८.	एक अलग प्रकार की अनोखा विश्वविद्यालय	.....२३
१९.	स्वर्णिम विचार से आ रहा स्वर्णिम संसार	.....३०
२०.	वैज्ञानिक अनुसंधान —मृत्यु से परे की खोज	.....३१

पवित्रता एवं श्रेष्ठ चरित्र से युक्त ब्रह्माकुमारी बहनों का कार्य विश्व शांति के लिए सर्वोपरि है ।

—स्वामी वेदव्यासानन्द जी सरस्वती

आबू पर्वत, ८ फरवरी । ओमशांति भवन में आयोजित चतुर्थ विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर सम्मेलन की पूर्व वेला में स्वागत समारोह में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए हरिद्वार से पधारे महामण्डलेश्वर स्वामी वेदव्यासानन्द जी ने कहा कि विगत कई वर्षों से मैं ब्रह्माकुमारी बहनों के सम्पर्क में हूँ। मैंने निकटता से देखा है कि ब्रह्माकुमारी बहनें एवं ब्रह्माकुमार भाई महान पवित्रता एवं श्रेष्ट चरित्र से युक्त हैं। इनकी कथनी करनी एक है, इनके जीवन से पवित्रता एवं शांति की तरंगे प्रवाहित होती हैं जिनका प्रभाव मेरे ऊपर ही नहीं वरन् हरिद्वार के सभी साधुओं एवं अखाड़ों पर है। स्वामी जी ने कहा कि मैंने अपने विश्व भ्रमण में २५ देशों का दौरा किया, मुझे हर जगह ब्रह्माकुमारी बहनें शांति का सन्देश फैलाते मिलीं। इनके निःस्वार्थ सेवा, उच्च पवित्रता एवं त्याग से प्रभावित होकर मैं अपने दो लाख अनुयायियों सहित इनके कार्य में पूर्ण सहयोगी हूं। हरिद्वार में भी नया सेवाकेन्द्र बहिनों ने खोला है, उसके उद्घाटन में

आबू पर्वतः चतुर्थ विश्वशान्ति महासम्मेलन के अन्तर्गत हुए सद्भावना तथा स्वागत समारोह का उद्घाटन करते हुए स्वामी वेदव्यासा नन्द जी सरस्वती।

शेष पृष्ठ ३ पर

सम्पादकीय

स्वर्ण जयन्ती वर्ष का शुभारम्भ

गत माह चतुर्थ विश्व शान्ति महासम्मेलन और अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धी रूहानी सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। उनकी सफलता इस बात में समाई थी कि वक्ताओं के अतिरिक्त योग युक्त बहनें और भाई जो श्रोतागण के रूप में उपस्थित थे, वे भी मनसा सेवा कर रहे थे। इसलिए वातावरण में अतीन्द्रिय सुख की लहरें थीं और सभी चेहरों पर आन्तरिक खुशी के चिन्ह स्वभावत: स्पष्ट थे जिनसे नव-आगन्तुक भी प्रभावित हो रहे थे। सारे भू-क्षेत्र पर ऐसा वातावरण तो कहीं भी नहीं मिल सकता जहां पर कि पवित्र जीवी एवं तपस्वी जनों के आत्मिक आनन्द की किरणें बहु मात्रा में हों। अत: आनेवाले बहन-भाई अपने वार्तालाप के बीच हृदय से अपने इन उद्‌गारों को व्यक्त भी करते थे कि यहां का वातावरण बहुत सुखद और शुद्ध है और कि ऐसा नि:स्वार्थ पारिवारिक प्रेम संसार में अन्यत्र दुर्लभ ही नहीं, अलभ है।

अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धी रूहानी सम्मेलन भी अपने प्रकार का एक नया प्रयोग था। भाषा के सूत्र से जुड़े हुए लोगों को आमन्त्रित करके दिव्यता के सूत्र में पिरोने की यह एक नई विधि थी। इसके पीछे कोई प्रान्तवाद या प्रदेश वाद की भावना नहीं थी बल्कि जिस तरह से भी कोई परमपिता परमात्मा के द्वार पर आ सके और उस परमप्रिय से दिव्य वरदान प्राप्त कर सके, उस तरह ही कार्य करने की एक नई योजना थी। लगभग 40 सिन्धी संस्थाओं के नेताओं ने इस सुअवसर पर यह जो भाव व्यक्त किया कि वे इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के अत्यन्त व्यापक कार्य को देखकर अपने लिए एक गौरव और गर्व का विषय मानते हैं—इस कथन से उन्होंने सिन्ध की पुरानी, मिटती हुई भ्रान्त धारणा को और भी मिटा दिया और वे प्रभु के और भी अधिक समीप आये। इस सम्मेलन में सम्मिलित होनेवाले लोग शिष्ट थे और आध्यात्मिकता में रुचि रखनेवाले थे। मधुबन के वातावरण का अनुभव करके उन्हें अच्छा लगा और अपनापन महसूस हुआ। उनमें से बहुत-से लोगों ने पूछा भी कि यह सम्मेलन अगले वर्ष भी तो करेंगे न? समस्त दैवी परिवार को भी उनका यहां आना अच्छा लगा और उन्हें खुश देखकर वे भी खुश हुए।

इस प्रकार स्वर्ण जयन्ती के इस वर्ष का आरम्भ इन दोनों सम्मेलनों से ठीक ही रहा। सभी को शिव बाबा का स्पष्ट परिचय देने की ईश्वरीय आज्ञा का पालन करने की भरसक कोशिश की गई। "परमात्मा सर्वव्यापक नहीं है; वह ज्योति बिन्दु है और हमारा परमप्रिय माता-पिता है" यह सत्यता स्पष्ट और सरल शब्दों में संन्यासियों, नेताओं, विद्वानों, वैज्ञानिकों और वक्ताओं, सभी को बताई गई। अर्द्ध चन्द्रमा के आकार में ब्रह्मचर्य व्रत धारिणी कन्याओं, कुमारों, युगलों इत्यादि ने समस्त उपस्थित गण के सामने प्यारे बाबा के निर्देश के अनुसार बाबा के उन स्वर्णिम महावाक्यों (Golden Thoughts) को सामने रखा जिनसे उनका जीवन कंचन समान बना।

"स्वर्णिम विचार से स्वर्णिम संसार" (Golden Thoughts for Golden age) सम्मेलनों के लिए चर्चा का यह मुख्य विषय भी अच्छा ही रहा। हिन्दुस्तान टाइम्स के भूतपूर्व सम्पादक खुशवन्त सिंह ने भी इन शब्दों का 15 व 22 फरवरी के अपने लेखों में अपना अनुभव व्यक्त करते हुए लिखा कि साईं बाबा, महेश योगी, आनन्द मूर्त्ति इत्यादि आश्रमों की तुलना में उसे यहां के बहनो-भाइयों के जीवन में काफी परिवर्तन महसूस हुआ। उसने अपने लेख में यहां के वातावरण, यहां की व्यवस्था, यहां के शुद्ध शाकाहारी भोजन तथा दादी जानकीजी के भाषण की भी काफी महिमा की।

इस बार जो कार्यशालाएं (Workshops) हुईं, उनमें भी युक्तियुक्त ही चर्चा हुई। यों तो पहले भी कार्यशालाओं में उच्च और लाभदायक विचारों की अभिव्यक्ति होती ही थी परन्तु इस बार भी उसका स्तर और ऊंचा रहा।

इस अवसर पर जो स्वर्ण युग मेला हुआ, उस द्वारा भी काफी सेवा हुई। विश्व शान्ति महासम्मेलन और अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धी रूहानी सम्मेलन में जो भी लोग आये, उन्होंने यह मेला भी देखा। इसके अलावा आबू में आनेवाले पर्यटकों तथा स्थानीय लोगों ने भी यह मेला देखा।

अब इस मास में शिव रात्रि का सर्वोच्च महोत्सव हम सब मनायेंगे। जन-जन को झांकियों, प्रदर्शनियों, भाषणों, संगोष्ठियों के द्वारा उस परमपिता का सत्य परिचय देंगे जिससे अभी तक कोटि-कोटि लोग अनभिज्ञ हैं। साकार बाबा ने एक बार यह कहा था कि इसकी घोषणा करो कि जो शिव बाबा का सत्य परिचय बताएगा हम उसको सोने का एक छोटा-सा शिवलिंग इनाम में देंगे। बाबा का कहने का भाव यह था कि संसार में यद्यपि लाखों-करोड़ों लोग शिव की भक्ति-पूजा करते हैं, वे उसका यथार्थ परिचय नहीं जानते। अब प्रिय शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा हमें कहते हैं कि अपनी अवस्था को ऐसा

उत्तम बनाओ कि आपके जीवन से लोगों को आपके शिक्षा-दाता शिव बाबा का परिचय मिले। अब हमें यही कोशिश करनी चाहिए कि योग-युक्त और स्वरूप-स्थित होकर हम शिव बाबा का परिचय दें जिससे सुननेवालों का ज्ञान-नेत्र खुल जायें। □

—जगदीश

पृष्ठ. १ का शेष

इस स्वागत समारोह से पूर्व प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मेडिटेशन हाल में एक पत्रकार गोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें विश्व भर से इस सम्मेलन में पधारे पत्रकारों एवं संचार संसाधनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

पत्रकार गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए ईश्वरीय विश्वविद्यलय के प्रमुख प्रवक्ता, ज्ञानामृत, वर्ल्ड रिन्युअल, प्युरिटी आदि पत्रिकाओं के मुख्य-सम्पादक ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र जी ने चतुर्थ विश्व शांति सम्मेलन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए विश्व शांति की समस्या का समाधान किस प्रकार किया जाना है, विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि पुरानी रूढ़ियाँ, रीतिरिवाज एवं परम्परायें इस प्रकार की रहीं है जिनसे मानव मन में विकृतियां आयी हैं। वे विकृतयां ही मानव को अशांति एवं विनाश की तरफ प्रेरित करती रहती हैं। अतः प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय शिक्षात्मक तरीके से मानव के मन की विकृतियां, रूढ़ियों, रीति रिवाज, परम्पराओं को बदलकर ज्ञान-योग, दिव्य गुण एवं सेवा भाव से तर्क पूर्ण ढंग से परिवर्तन ला रहा है जिससे हिंसात्मक, भौतिक मनोवृति का परिवर्तन होकर मनुष्य की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सभी समस्याओं का सही समाधान मिल रहा है जो विश्व शांति की ओर एक रचनात्मक कदम है। राजयोग के अभ्यास से मनोवृति परिवर्तन सहज होता है।

मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने पत्रकारों को शुभकामना पूर्ण सन्देश देते हुए कहा कि पत्रकार भाई बहनें अपने परिवर्तन से एवं कलम के शुभ लेख से विश्व शांति के लिये महान कार्य कर सकते हैं। उप-मुख्यप्रशासिका दादी जानकी जी ने राजयोग की अनुभूति पत्रकारों को क्रियात्मक रूप से कराई। पत्रकार गोष्ठी का संचालन इन्दौर जोन के निदेशक ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश जी ने किया।

स्वागत समारोह की अध्यक्षा संयुक्त उप मुख्य प्रशासिका दादी निर्मलाशांता जी ने 'परमात्मा का अवतरण कब, क्यों और कैसे ?' पर विस्तार से प्रकाश डाला। ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन ने राजयोग की विधि बताते हुए योगानुभूति करायी। स्वागत समारोह में ही बहिन गायत्री मोदी ने सम्मेलन में पधारे विश्वभर के सभी प्रतिनिधियों का आयोजकों की तरफ से हार्दिक स्वागत किया। अहमदाबाद के हंसमुख भाई ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस समारोह का संचालन ब्रह्माकुमार अमीर चन्द जी ने किया।

आबू पर्वतः स्वर्ण जयन्ती समारोह का उद्घाटन शिव ध्वजारोहण कर के किया गया।

माउण्ट आबू में स्वर्णिम युग मेला का उद्घाटन सम्पन्न

माउण्ट आबू ८ फरवरी।

स्वर्ण जयन्ती समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित स्वर्णिम युग मेला का उद्घाटन आज सांयकाल राजस्थान के स्वायत्त शासन मन्त्री माननीय छोगालाल बकोलिया जी ने किया। उन्होंने इस मेला को महान शिक्षाप्रद, प्रेरणादायी 'एवं स्वर्णिम विचार से स्वर्णिम संसार लाने का एक अद्भुत साधन बताया। बकोलिया जी के साथ मेला को अनेक प्रतिष्ठितजनों ने भी अवकोलन किया। इस अवसर पर आयोजित उद्घाटन समारोह में मेला के संयोजक भ्राता महेन्द्र जी ने मेला की आवश्यकता एवं महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुये बताया कि हमारा इतिहासकार यह भूल करता रहा है कि हम पाषाणयुग से गुजरते हुए विकास की ओर बढ़े हैं जबकि सत्य इसके विपरीत यही है कि पहले विश्व में दैवी दुनिया, स्वर्णिम युग था वह युग आने वाला है उसका सारा प्रोग्राम इस मेला के द्वारा बताया गया है।

मुख्य अतिथि रोड्रिगो केरिजो ओडियो, संयुक्त राष्ट्रसंघ की युनिवर्सिटी आफ पीस के डायरेक्टर जी ने बताया कि यह बर्ष १९८६ बड़ा भंयकर दौर से गुजर रहा है, चारों तरफ हिंसा एवं युद्ध का आतंक-वादी दौर है। उस सबको समाप्त करने एवं विश्व में शान्ति लाने हेतु यह वर्ष १९८६ यू.एन.ओ. ने विश्व शान्ति वर्ष के रूप में रखा है। उन्होंने ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्था एवं ये बहनें विश्व शान्ति के लिये महान कार्य कर रही हैं। मेरा पूरा सहयोग हर प्रकार से इस विश्व शांति प्रदायनी संस्था के साथ है। उन्होंने बताया कि भारत एक महान देश है उसमें भी आबू महान तीर्थ है जहाँ से शांति की नदियाँ बहकर सारे विश्व में शान्ति की धारा फैला रही हैं। उन्होंने बताया कि अशांति मानव के मन में पैदा होती है अतः मन को शान्त करने के लिए राजयोग की आवश्यकता है। उस राजयोग का सही वैज्ञानिक तरीका यह ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय बता रहा हैं। इसलिए हमने अपने देश में अनेक स्थानों पर इसके राजयोग प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित कराये हैं। उसके परिणाम स्वरूप एक नई चेतना विश्व शान्ति हेतु पैदा हो रही है।

समारोह की अध्यक्षता ब्रह्माकुमारी रत्न मोहिनी जी ने की संचालन ब्रह्माकुमारी बिन्दु, राजयोग शिक्षिका, कलकत्ता ने किया।

इसके पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी ने "परमात्मा शिव" का ध्वज फहरा कर समारोह का शुभारंभ किया। इस अवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा आबू के मुख्य मार्गो से निकाली गई जिसमें विश्व के ४३ देशों तथा भारत के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुए लगभग ३००० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। शोभा यात्रा के साथ दो भव्य झाकियाँ भी निकाली गई शोभा यात्रा का स्वागत आबू नगर पालिका के सदस्यों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने विभिन्न स्थानों पर किया तथा मुख्य चोराहे पर राजस्थान के राज्यपाल बसन्त राव पाटिल ने भी अवलोकन किया। पोलोग्राउण्ड मेला स्थल पर जाकर यह शोभा यात्रा एक विशाल सभा में परिवर्तित हो गई।

राजस्थान के राज्यपाल महामहिम वसत राव पाटिल को ब्र. कु. दादी प्रकाशमणि जी ईश्वरीय सौगात देते हुए।

7 फरवरी

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्व शांति महासम्मेलन का उद्घाटन

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के अध्यक्ष न्यायमूर्ति नगेन्द्रसिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया । आपने उद्घाटन भाषण में कहा कि विश्व की वर्तमान संकटकालीन परिस्थितियों में विश्व में शांति स्थापित करने की अति आवश्यकता है । ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा इस दिशा में किया जा रहा प्रयास अत्यन्त सराहनीय है । केन्द्रीय संचार मंत्री माननीय रामनिवास मिर्धा ने कहा कि विश्व बन्धुत्व की भावना लाने तथा शांति की अनुभूति कराने के लिये राजयोग का अभ्यास अत्यन्त आवश्यक है । देहली क्षेत्र की संचालिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी एवं संयुक्त प्रशासिका ब्रह्माकुमारी निर्मल शांता जी ने बताया कि पवित्र एवं उच्च विचारों द्वारा ही विश्व में स्थायी शांति स्थापित हो सकती है ।

9 फरवरी आज आबू पर्वत स्थित संस्था के मुख्य सभागार ओमशांति भवन में मुख्य अधिवेशन का उद्घाटन राजस्थान के राज्यपाल महासचिव वसन्त दादा पाटिल ने दीप प्रज्वलित कर किया । उद्घाटन में आपने कहा कि आज विश्व विनाश के कगार पर पहुंच चुका है । हिंसा, युद्ध, आंतक, जाति-भेद, धर्म-भेद, रंग-भेद, जनसंख्या विस्फोट तथा प्रदूषण आदि विश्व व्यापी समस्याओं के कारण ही विश्व में अशांति एवं घृणा है तथा खूनी नाहक खेल हो रहा है । इन समस्याओं का समाधान जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों की पुनर्स्थापना द्वारा ही संभव है ।

७ फरवरी, नई दिल्ली में विश्वशान्त महासम्मेलन का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर के कर रहे हैं विश्व न्यायालय के अध्यक्ष भ्राता नगेन्द्रसिंह जी।

भौतिक विकास एवं वैज्ञानिक उपलब्धियां मानव की भूख नहीं मिटा सकी हैं । अपितु विनाश के निकट विश्व पहुंच गया है ।

आगे आपने कहा कि मानव के नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के द्वारा विश्व शांति लाने हेतु ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का प्रयास अति उत्तम एवं सराहनीय है । कई वर्षों से मैं इनके निकट सम्पर्क में हूं ।

केन्द्रीय योजना राज्यमंत्री माननीय अजीत पंजा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज विश्व में जो भी तनाव एवं अशांति का वातावरण बना है उसमें आत्मिक भाव का न होना ही मुख्य कारण है । विश्व के करोड़ों लोगों में जब आत्मभाव पैदा होगा तब ही आपसी सौहार्द होगा । शिक्षा की नीति आध्यात्मिकता का प्रमुख स्थान होना अनिवार्य है ।

संयुक्त राष्ट्र की कोस्टा रिका स्थित शांति विश्वविद्यालय के अध्यक्ष केरेजो ओडियो ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि विश्व की वर्तमान स्थिति से सभी परिचित हैं इसलिये विश्व शांति हेतु वर्तमान वर्ष को अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया है । इसलिये विश्व की प्रत्येक सरकार को चाहिये कि वे रोजाना एक घंटे का समय अपने देशवासियों को शांत रहने का नियत करें । इसके लिये ब्रह्माकुमारी संस्था का राजयोग एक सही तरीका है ।

इस अवसर पर ईश्वरीय विश्वविद्यालय के प्रमुख प्रवक्ता जगदीशचन्द्र जी, यू.एन.ओ., के भारत स्थित सूचना केन्द्र के निदेशक बी.सी. पटेल, राजस्थान के स्वायत्त शासनमंत्री माननीय छोगालाल बकोलिया ने भी अपने विचार प्रकट किये । अन्त में अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि दादी जी ने कहा कि व्यक्तिगत शांति एवं नैतिक आध्यात्मिक जीवन आचरण के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति विश्व शांति के कार्य में सहयोगी बने । □

संचार माध्यमों का विश्व शान्ति में योगदान

माउण्ट आबू, 9 फरवरी । चतुर्थ विश्व शांति सम्मेलन के अन्तर्गत आयोजित संचार माध्यमों के प्रतिनिधियों की कार्यशाला में आज विश्वभर से पधारे पत्रकारों ने भाग लिया । गोष्ठी की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध पत्रकार एवं संसद सदस्य खुशवंतसिंह ने की । ब्रहमाकुमार करुणाजी ने अपना आलेख पढ़ा जिसमें उन्होंने पत्रकारों एवं संचार माध्यमों को विश्व शांति के कार्य में अपनी लेखनी के माध्यम से सहयोगी बनने का आव्हान किया ।

खुशवंतसिंह जी ने अपने विवेचनात्मक भाषण में बताया कि हमारे भारत जैसे देश में जहां 70 प्रतिशत लोग अशिक्षित हैं, समाचार-पत्रों को पढ़ते ही नहीं, जो 30 प्रतिशत शिक्षित हैं उनमें से भी केवल 10 प्रतिशत ही ऐसे हैं जो समाचार-पत्र पढ़ते हैं । अत: यदि समाचार-पत्र विश्व शांति के बारे में लिखे भी तो उसको पढ़नेवाला समुदाय कितना होगा यह विचारणीय विषय है । इसके विपरीत रेडियो एवं दूरदर्शन को देश के 80 प्रतिशत लोग सुनते या देखते हैं परन्तु ये दोनों माध्यम शासन के अधीन होने के कारण वही प्रसारित करेंगे जो शासन की नीति होगी । अत: इनके द्वारा भी शांति का सन्देश नहीं पहुंचाया जा सकता है । इसके विपरीत विदेशों में रेडियो सरकार के प्रभाव से मुक्त है । अत: वहां पर जो समाचार प्रसारित होते हैं उनसे बहुत बड़ा समुदाय लाभ उठाता है । खुशवंतसिंह जी ने बताया कि विश्व शांति का सन्देश इस प्रकार प्रेरणादायी एवं रमणीक बनाया जाय कि लोग स्वत: ही उसे ग्रहण करें । एक-दूसरे को प्रसारित करें । उन्होंने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि आज का पत्रकार सुविधा भोगी है, मेहनत नहीं करता है, वह केवल खरीदी हुई खबरें ही यू.एन.आई., पी.टी.आई. की छापता है । अत: उससे विश्व शांति के कार्य में सहयोग की आशा क्या की जाय ?

आबू पर्वत: चतुर्थ विश्वशान्ति महासम्मेलन के अन्तर्गत हुई 'एडमिनसट्रेटर तथा एगज़ीक्यूटिव' कार्यशाला में बोलते हुए भ्राता वी. एन. नेगी, डी. आई. जी., सी. आई. डी., हरियाणा।

मुख्य अतिथि प्रो. अन्ना बालेट्बो ने बताया कि पत्रकार अपने पूर्वाग्रहों एवं दबावों से मुक्त नहीं है । अत: उसका सहयोग मुक्त रूप से नहीं मिल सकता है । यदि वह राजयोग सीख ले तो विश्व शांति के कार्य में सहयोगी बन सकता है ।

समाचार भारती के जनरल मैनेजर आर.पी. सूद, इंडियन एक्सप्रेस के सम्पादक आर. सम्पत, ब्राज़ील के रिकार्डो विवेरजो डी. पोला ने भी यही विचार व्यक्त किये कि राजयोग के माध्यम से पत्रकार अपने स्वयं के मानस को सन्तुलित करके हिंसा एवं शोषण के विरुद्ध छापें तो विश्व शांति में सहयोग होगा ।

संस्था की उप-मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी ने अपने मर्मस्पर्शी सन्देश में कहा कि विश्व शांति के सन्देश को पत्रकार भाई प्रमुखता से जन-जन तक पहुंचायें ।

आब पर्वत: विश्वशान्ति महासम्मेलन के अन्तर्गत हुई वैज्ञानिकों की कार्यशाला प. जर्मनी के वैज्ञानिक विल्हेम स्टेनमुलर की अध्यक्षता में हो रही है।

कार्यशाला—राजनीतिज्ञ/संसद सदस्य/विधायक

इस कार्यशाला के अन्तर्गत ''नि:स्वार्थ सेवा'' विषय पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे भ्राता अजीत पंजा, केन्द्रीय योजना राज्यमंत्री ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि संसार में दो प्रकार के दार्शनिक हुए हैं, एक मानते हैं कि नि:स्वार्थ सेवा हो सकती है, दूसरे कहते हैं नि:स्वार्थ सेवा सम्भव नहीं है । मेरा विश्वास है संसार का त्याग करना ठीक नहीं है । संसार में रहकर ही सेवा करनी चाहिये । उन्होंने आगे कहा कि इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा की जा रही सेवायें नि:स्वार्थ हैं ।

न्यूयार्क से पधारी आज की गोष्ठी की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मोहिनी जी जो कि वर्तमान समय संयुक्त राष्ट्र संघ की अशासकीय सलाहकार परिषद् में संस्था की प्रतिनिधि है, ने अपने दिव्य सन्देश में कहा कि नि:स्वार्थ सेवा के लिये आवश्यक है कि वह अपने जीवन की आवश्यकताओं को कम-से-कम रखें । इसके लिये यह भी आवश्यक है कि हम नकारात्मक विचारों को त्यागें, अपनी आन्तरिक शक्तियों को समझें और अपने सोच का परिवर्तन करें ।

भारत में ग्याना के हाई कमिश्नर भ्राता स्टीव नारायण ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि विश्व में प्रति मिनट 20 लाख डॉलर घातक हथियार बनाने में खर्च किया जा रहा है, जबकि दूसरी ओर विश्व भुखमरी, बीमारी, बेकारी तथा अशिक्षा से ग्रस्त है । ऐसी स्थिति में संसार को बहुत शांति की आवश्यकता है ।

इस अवसर पर बोलते हुए भारत में पनामा के राजदूत भ्राता होरएको बस्टमैनाट ने कहा कि मैं सुन्दर, सुहावने आबू की धरातल तथा पवित्र ब्रह्माकुमारियों के मध्य आकर अति प्रसन्न हूं । उन्होंने कामना व्यक्त की कि विश्व को तनाव मुक्त करने के लिये प्रत्येक जगह इस संस्था की शाखा खोली जावे ।

कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए राजस्थान विधानसभा के उपाध्यक्ष भ्राता गिरीराजप्रसाद तिवारी ने कहा कि जहां धर्म है वहां नि:स्वार्थ सेवा होती ही है, जब हम धर्म से दूर हटते हैं तब ही स्वार्थ आता है ।

राजकोट की सांसद् रमा बहन ने अपने अनुभवों के आधार से बताया कि भविष्य में शांति का नोबल पुरस्कार इस संस्था को अवश्य ही प्राप्त होगा । अन्य वक्ताओं में सांसद् नरेशचंद्र चतुर्वेदी, सांसद् बी.सी. केशवराव तथा सांसद् सत्यनारायण पंवार और विधायिका बहन चन्द्रिका जी प्रमुख थीं ।

कार्यशाला—उद्योगपति एवं व्यापारी

इस कार्यशाला की अध्यक्षता जी.आर.एस. रॉव ने की । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि उद्योगपति स्वत: ही अपने नैतिक चरित्र के द्वारा विश्व के सामने एक आदर्श उपस्थित कर सकता है । कार्य न छोड़े लेकिन शोषण से धन कमाने की कामना छोड़कर विश्व शांति मानव-कल्याण में सहयोग करें । उसके लिये उसे राजयोग अवश्य ही सीखना चाहिये जो यह संस्था सिखा रही है ।

मेक्सिको के मैनेजमेन्ट कन्सलटेन्ट डॉ. आर्नोसो ने अपना पेपर प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने बताया कि व्यापार नैतिक मूल्यों पर आधारित शोषण विहीन होना चाहिये वह होगा

आबू पर्वत:-चतुर्थ विश्वशान्ति महासम्मेलन के अन्तर्गत हुई 'स्वास्थ्य वैज्ञानिक' कार्यशाला में वक्तागण उपस्थित हैं।

आत्मभाव की स्थिति से एवं राजयोग के अभ्यास से । पोरबन्दर के उद्योगपति धीरेन्द्र मेहता, दिल्ली के बृजमोहन सिन्हा, अहमदाबाद के उद्योगपति पंकज भाई ने भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त किये । ब्रह्माकुमारी रुक्मणि बहन ने कर्म के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए भाई-भाई की भावना से उद्योग चलाने की प्रेरणा दी तथा ईश्वरीय सन्देश सुनाया ।

कार्यशाला—स्वास्थ्य वैज्ञानिक

कार्यशाला के अध्यक्ष डॉ. जी.एन. नारायण स्वामी, डॉयरेक्टर नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ मेन्टल हेल्थ एवं न्यूरो साईंस, थे । उन्होंने अपने भाषण में बताया कि शारीरिक स्वास्थ्य पर मन का भारी प्रभाव होता है । अत: मन को स्वस्थ रखना आवश्यक है । मन मस्तिष्क को तनाव मुक्त रखने के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि आध्यात्मिक नैतिक जीवन व्यतीत किया जाय । उसके लिये यह संस्था राजयोग का वैज्ञानिक तरीका सिखा रही है जिससे शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य की प्राप्ति की जा सकती है ।

मेडिकल कॉलेज मैसूर के डॉ. कान्दा स्वामी ने "मानसिक स्वास्थ्य ही सामाजिक स्वास्थ्य की आधारशिला है" विषय पर आलेख पढ़ा और बताया कि एक व्यक्ति यदि तनावयुक्त है तो उसका परिवार भी तनाव में फंस जाता है । एक अशान्त व्यक्ति अनेकों को अशान्त कर देता है । अत: व्यक्तिगत शांति से सामाजिक शांति लाने हेतु राजयोग द्वारा मस्तिष्क को शीतल बनाना होगा ।

मैसूर की स्वास्थ्य एवं परिवार-कल्याण विभाग की संयुक्त निदेशक डॉ. लीलावती देवदास, कर्नाटक मेडिकल कॉलेज की आर.एम.ओ., डॉ. सरोज बेवूर, आगरा की मेडिकल एसोसिएशन की निदेशक डॉ. आर.के. वर्मा, सिडनी की डॉ. निर्मला काजरिया, बम्बई के डॉ. गिरीश पटेल, लन्दन के डॉ. डेविड गुडमेन, आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये ।

कार्यशाला—न्यायविद

इस कार्यशाला के अध्यक्ष भारत के सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश जस्टिस वी.आर. कृष्णा अय्यर ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि विश्व शांति के लिये राजयोग ही मनोपरिवर्तन का आधार है । कानपुर के एडव्होकेट सन्तराम जी ने पेपर पढ़ा, उन्होंने न्याय और कानून में आध्यात्मिकता एवं न्यायपूर्ण समाज पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि इसी भारत में सतयुग में पूर्ण मुक्त राज्य था । प्राकृतिक कानून से ही वर्तमान कानून बने हैं । आन्तरिक अनुशासनवाला ही कानून का पालन करता है । ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय राजयोग की शिक्षा द्वारा मनोवृत्ति परिवर्तन करके ऐसा सुन्दर संसार बना रहा है ।

इस कार्यशाला में हिमाचल प्रदेश के लोकायुक्त जस्टिस टी.वी.आर. टाटाचारी, गुजरात हाईकोर्ट के जस्टिस ए.एस. कुरैशी, इन्दौर हाईकोर्ट के जस्टिस वीरेन्द्र दत्त ज्ञानी, आंध्रप्रदेश के जस्टिस सी. श्रीरामुलु, रॉयपुर के जज डी.पी. वर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किये । □

विश्वशान्ति महासम्मेलन के अन्तर्गत हुई न्यायविद् कार्यशाला में मंच पर (बाएं से) ब्र. कु. जयप्रकाश जी, न्यायाधीश सी. श्रीरामुलु, न्यायाधीश भ्राता ए.एस. कुरैशी, ब्र. कु. सन्तराम, न्यायाधीश श्री कृष्णा अय्यर, हिमाचल के लोकायुक्त न्यायाधीश टी. वी. आर. टाटाचारी तथा ब्र. कु. हृदयपुष्पा।

निष्काम सेवा एवं मानव मात्र के प्रति प्रेम रखने से निश्चय ही विश्व में सुख शांति आ सकती है

खुशवंतसिंह

माउण्ट आबू 10 फरवरी। चतुर्थ विश्व शांति महासम्मेलन के आज के खुले अधिवेशन में ''स्वर्णिम युग'' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सुप्रसिद्ध लेखक, विचारक एवं पत्रकार खुशवतसिंह ने कहा कि लोग धर्म का नाम लेते हैं लेकिन धर्मों ने जो सिखाया है उस अनुसार कार्य नहीं करते हैं। यही कारण है कि आज एक धर्म दूसरे धर्म से लड़ रहा है। धर्मों ने हिंसा एवं नफरत ही फैलाई है इसलिये मेरा जैसा व्यक्ति धर्मों से आस्था खो बैठा है। लेकिन इसके विपरीत यहां ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की भावनायें विशाल हैं, ये जो कहती हैं वही आचरण में करती भी हैं। इनके मन में सभी धर्मों, सभी मानवों के प्रति प्रेम एवं कल्याण की भावना है इसका प्रत्यक्षीकरण हम यहां हर धर्म जाति एवं देश के व्यक्ति प्रेम शांति से बैठे ''स्वर्णिम युग'' लाने की योजना बना रहे हैं। इन बहनों के प्रेम भाव एवं पवित्रता से प्रभावित होकर ही इनकी निष्काम विश्व कल्याणकारी सेवाओं को देख मैं यहां आया हूं। खुशवंतसिंह जी ने कहा कि मन्दिर तोड़ो, चाहे मस्जिद तोड़ो, चाहे गिर्जाघर तोड़ो, चाहे गुरुद्वारा तोड़ो मगर इन्सान का दिल नहीं तोड़ो क्योंकि जो इन्सानों से प्रेम नहीं करता वह भगवान् से भी प्रेम नहीं कर सकता। उन्होंने भगवान्, गुरु, शास्त्र, धर्मस्थान एवं प्रार्थनाओं की विभिन्नता के बावजूद भी भावनात्मक एकता प्रेम भाव लाने की आवश्यकता बताई क्योंकि किसी भी धर्म ने नफरत करना नहीं सिखाया है। फिर लोग ऐसा क्यों करते हैं उसका कारण उनकी विवेकहीनता है,उन्होंने कहा कि धर्मशास्त्र को केवल श्रद्धा पूजा का विषय न माना जाय बल्कि अच्छा एक दर्शनशास्त्र समझे तो ज्यादा अच्छा है। उसे पूजे नहीं प्रेरणा लें। उन्होंने राजयोग की व्याख्या एक दर्पण से तुलना करते हुए कहा कि जैसे दर्पण व्यक्ति का चेहरा दिखाता है उसी प्रकार राजयोग के अभ्यास से ज्ञान के दर्पण में व्यक्ति अपने भले-बुरे कर्मों को देख लेता है,बुराइयों को छोड़कर मानवता की ओर बढ़ता जाता है।

उप-मुख्य-प्रशासिका दादी जानकी जी ने इस अवसर पर अपने प्रवचन में बतलाया कि धर्म कहता है कि कथनी, करनी एक हो जाये। अतः पहले शुभ कर्म करो फिर कहो, यही विगत् 50 वर्षों से हमको परमपिता परमात्मा सिखा रहे हैं। तदनुसार ही हरेक को आत्म भाव से देखते हैं। एक पिता की सन्तान हैं, सब भाई-भाई हैं, हमारी किसी की देह पर दृष्टि नहीं जाती, हम सबको आत्म-रूप में देखते हैं। समझदार वह जो रुहों से प्यार करना सीखे, रुहों का कल्याण करना सीखें। सभी रुहानी बाप को पहचान रुहानी प्रेम, रुहानी शक्ति, रुहानी आनन्द का परमपिता से वरसा ले लें यही शुभकामना रहती है।

आबू पर्वतः-विश्वशान्ति महासम्मेलन के १० फरवरी के खुले अधिवेशन में अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए सुप्रसिद्ध लेखक तथा सांसद भ्राता खुशवंत सिंह जी।

जहां पवित्रता है वहां सतयुग आया कि आया । हम संगम पर हैं । अब कलियुग जानेवाला है सतयुग आनेवाला है ।

डॉ. रोड्रिगो केरेजो ओडियो, संयुक्त राष्ट्र की कोस्टारिका स्थित शांति विश्वविद्यालय के अध्यक्ष ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि विश्व को विनाश से बचाने के लिये शांति की शक्तियों को विश्व शांति के लिये संगठित होकर कार्य करना है । उनके देश कोस्टा रिका में सेना नहीं रखी जाती, उन्हीं के प्रयास से यू.एन.ओ. ने 1986 को अन्तर्राष्ट्रीय शांति वर्ष घोषित किया है । एक प्रस्ताव यह भी है कि हर देश एक दिन शांति दिवस के रूप में मनाये । ब्रह्माकुमारी बहनें यह कार्य कर रही हैं ।

ब्रह्माकुमार रमेश शॉह, बम्बई ने अपने खोजपूर्ण प्रवचन में बताया कि सतयुग में आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक व्यवस्थायें दिव्यता पूर्ण होती हैं । वहां शोषण का नाम नहीं है । आपने आगे बताया कि स्वर्णिम युग लाने के लिये पवित्रता, शांति की मां है तो सत्य शांति का पिता है । अत: पवित्रता एवं सत्य के द्वारा ही विश्व में शांति होगी, नया स्वर्णिम युग, सतयुग आ जायेगा ।

आबू पर्वत: बी. के. रिकार्डो विबेरोस ब्राजील की शैक्षणिक संस्था की ओर से दादी प्रकाशमणि जी को कनडैकोरेशन (सर्टिफिकेट) प्रस्तुत करते हुए।

भारत में ग्याना के हाई कमिश्नर स्टीव नारायण, पश्चिम जर्मनी के वैज्ञानिक विलहम स्टाइन मूलर, पश्चिम जर्मनी में सेवा केन्द्र इंचार्ज ब्रह्माकुमारी सुमन बहन एवं हिमाचल प्रदेश के लोकायुक्त जस्टिस टी.वी. आर.टाटाचारी ने भी स्वर्णिम युग की पुनरावृत्ति पर अपने खोजपूर्ण विचार व्यक्त किये । □

ब्राजील की एक शैक्षणिक संस्था द्वारा दिया गया सर्टीफिकेट (A Condecoration).

"चतुर्थ विश्व शांति महासम्मेलन द्वारा मान्य प्रस्ताव"

माउण्ट आबू 11 फरवरी । इस सम्मेलन में विचार-विमर्श के उपरान्त यह निर्णय लिया गया कि, आज मानवता ऐसे चौराहे पर आकर खड़ी है जहां विश्व में विनाश हेतु भयंकर अणु शास्त्र तैयार हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या है, पर्यावरण प्रदूषण है, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, जातिगत विवाद है, आतंकवाद है, एवं शस्त्रों की होड़ का एकाधिकार है जिससे मानवता को जीवित रहने का खतरा पैदा हो गया है ।

अतः विश्व भर के 43 देशों से इस चतुर्थ विश्व शांति सम्मेलन में भाग लेने आये प्रतिनिधिगणों ने इस अवसर पर आयोजित विभिन्न खुले अधिवेशन एवं शिक्षा, संचार, न्यायविद, वैज्ञानिक, चिकित्सक, महिला, युवक, व्यापारी कूटनीतिज्ञ एवं राजनीतिज्ञ आदि के लिये आयोजित कार्यशालाओं में विचार-विमर्श के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि विश्व में अशांति फैलाने का मुख्य कारण स्वयं की पहचान न होना एवं दया, क्षमा, करूणा, सहानुभूति एवं भ्रातृ प्रेम तथा सेवाभाव आदि मानव मूल्यों का अभाव ही है ।

अतः प्रतिनिधियों ने माना कि...

(1) समस्त व्यक्ति, समूह एवं समाज के हर वर्ग के लोग आपस में सहकार एवं प्रेम से रहते हुए आपसी विवादों का अहिंसात्मक तरीके से शांति पूर्ण समाधान करें ।

(2) चिकित्सक अपने मरीजों को राजयोग के तरीके से भी स्वास्थ्य रहने की विधि बतायें ताकि शारीरिक रोगों के साथ ही सामाजिक, मानसिक रोगों का भी निदान हो सके ।

(3) मेडिकल कालेजों में चिकित्सा की अन्य विधियों की तरह ही राजयोग की विधि को भी प्रथक से या संयुक्त रूप से पढ़ाना चाहिये तथा स्कूलों, कालेजों में भी वैज्ञानिक तरीके से राजयोग की शिक्षा देनी चाहिये ताकि सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त हो सके ।

(4) शिक्षण संस्थाओं में चैतन्यता का अध्ययन एक विशेष स्तर तक कराना चाहिये क्योंकि यह अनुभव किया गया है कि अभिचेतना प्राथमिक वास्तविकता है और शिक्षा का उद्देश्य, जीवन की वास्तविकता जानना होना चाहिये ।

(5) वैज्ञानिक अन्वेषणों सहित मानव कृत कोई भी कार्य निरर्थक नहीं है अतः समाज को यह निर्णय करना चाहिये कि वैज्ञानिकों एवं तकनीशियों द्वारा किया गया अन्वेषण कहीं मानवीय नैतिक मूल्यों के विरूद्ध तो नहीं है ।

(6) समाचार पत्रों एवं संचार माध्यमों को हर प्रकार के दबावों से मुक्त रखना चाहिये और एक ऐसी आचार संहिता बनानी चाहिये जो सरकार, पत्रकार एवं संचार माध्यमों के मालिकों को स्वीकार्य हो ।

(7) संचार माध्यमों को विश्व शांति एवं सौहार्द पैदा करनेवाले समाचारों को प्राथमिकता के साथ प्रसारण करना चाहिये ।

(8) कानून एवं न्याय के क्षेत्र में अपराधियों को सुधारने का एक तरीका राजयोग भी रखा जाये और जेलों में प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाये ।

(9) राजनीति एवं कूटनीति भी नैतिक सिद्धान्तों के मूल्यों पर आधारित हो, राजनीतिज्ञ कूटनीतिज्ञ सभी बातों से ऊपर उठ कर मानव कल्याण के लक्ष्य को सर्वोपरि रखें ।

(10) स्त्रियों को भी पुरुष के समान आध्यात्मिक चेतना जगाने एवं नैतिक मूल्यों को बढ़ाने में बराबर पहल करने का अवसर हो । स्त्री-पुरुष के समान विकास से सौहार्द का वातावरण बनेगा ।

(11) अहिंसा, धैर्य एवं सहयोग तथा सौहार्द बढ़ाने में युवकों की प्रमुख भूमिका है अतः प्रत्येक संस्था युवकों को इन कार्यों के बढ़ाने में सहभागी बनाये ।

(12) उद्योग एवं व्यापार में मानवता, शोषणहीनता एवं नैतिकता हो तथा उपभोक्ताओं एवं कर्मचारियों की आवश्यकता एवं अधिकारों का ध्यान रखा जाय केवल लाभ कमाने की प्रवृत्ति न हो ।

(13) प्रतिनिधियों ने प्रस्ताव किया कि..

वे अन्तर्राष्ट्रीय शांति वर्ष एवं प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्वर्णिम जयन्ती वर्ष के अन्तर्गत अपने स्वर्णिम विचारों से स्वर्णिम सौहार्दपूर्ण तरंगे फैलाकर विश्व में शांति लाने के कार्य में सहयोगी बनेंगे ।

इस सम्मेलन में यह भी आग्रह किया गया कि साउथ अफ्रीका, लेबनॉन, लीबिया, चाड, ईरान और इराँक आदि में जो युद्ध की ज्वाला धधक रही है वे सारे विश्व की मानवता की पुकार को सुने एवं इस अन्तर्राष्ट्रीय शांति वर्ष के अन्तर्गत आपसी विवादों को मिल बैठकर सुलझा कर समाप्त करें।

यह सम्मेलन यह भी आग्रह करता है कि विश्व के सभी लोग अपनी उन कुछ बुरी आदतों को अवश्य छोड़ दें जो मानव मन में तनाव पैदा करती हैं एवं झगड़े का कारण बनती है। □

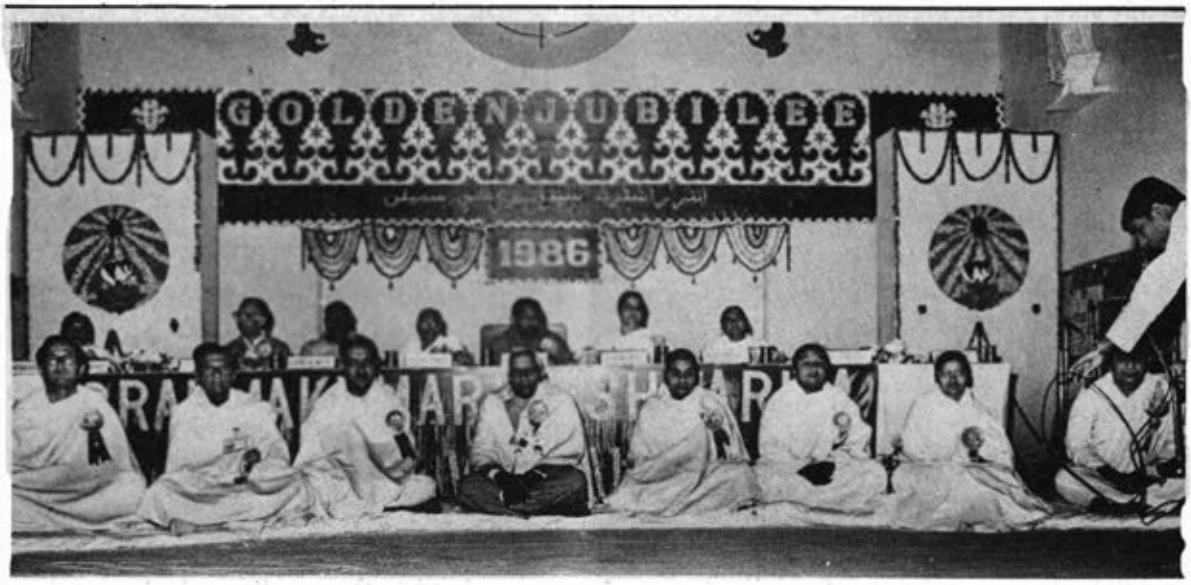

आबू पर्वत:-अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धी रूहानी सम्मेलन के अन्तिम खुले अधिवेशन में एक कुमार, एक कन्या, एक युगल, तथा अन्यों ने अपने वे स्वर्णिम विचार सुनाएं जिन से उनका जीवन ऐसा स्वर्णिम बना।

आबू पर्वत:-स्वर्ण जयन्ती समारोह में देश विदेश से पधारे कवि, गायक, फ़िल्म निदेशक, तथा अन्य कलाकार दादी निर्मल शान्ता जी, दादी प्रकाशमणि जी, दादी जानकी जी, ब्र. कु. ऊषा बहिन के साथ।

अन्तर्राष्ट्रीय रूहानी सिन्धी सम्मेलन में विश्व-भर से हज़ारों सिन्धी प्रतिनिधि भाग लेने माउण्ट आबू पहुंचे

माउण्ट आबू, 11 फरवरी, '86 । प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विश्व शांति सम्मेलन के कल समापन के उपरान्त आज यहां ओमशांति भवन में अन्तर्राष्ट्रीय रूहानी सिन्धी सम्मेलन शुरू हुआ । उसकी पूर्ववेला में आज ओमशांति भवन में समस्त प्रतिनिधियों का स्वागत समारोह आयोजित किया गया जिसमें विश्व के प्रमुख सिन्धी नेताओं ने उपस्थित होकर इस सम्मेलन के लिये अपनी शुभकामनायें प्रेषित की ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए राजस्थान उच्च न्यायालय के अतिरिक्त मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति गुमानमल लोढ़ा जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि ओम-मण्डली से लेकर ओमशांति भवन तक एवं सिन्ध करॉची से शुरू होकर विश्व के कोने-कोने तक आज ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का विस्तार है, यह संस्था धरती पर स्वर्ग है । उन्होंने कहा कि जो लोग इस धवल चादर के समान पावन संस्था के बारे में भ्रामक प्रचार करते हैं, उनसे मैं कहूंगा कि यदि वे स्वयं इस ज्ञान गंगा में स्नान नहीं कर सकते तो कम-से-कम भ्रामक मिथ्या प्रचार से इस पवित्र ज्ञान गंगा में प्रदूषण तो नहीं फैलायें । ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में सादगी स्वच्छता, पवित्रता है, इनकी कथनी-करनी एक है । इसे संयुक्त राष्ट्र ने मान्यता प्रदान की है तो दूसरी ओर भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रान्तों के राज्यपाल एवं प्रमुख प्रतिष्ठित महानुभावों ने समय-प्रति-समय यहां के कार्यक्रमों में उपस्थित होकर इनके कार्य की सराहना करते हुए मान्यता प्रदान की है । जस्टिस लोढ़ा ने सिन्धी प्रतिनिधियों का आव्हान किया कि अब तक जो कुछ भी उनके दिल में संस्था के बारे में भ्रम था उसे आपने यहां उपस्थित होकर आंखों से देखकर, समझकर दूर किया है, अब आपका फर्ज़ है कि विश्व शांति एवं विश्व निर्माण के इनके पुनीत कार्य में सक्रियता से जुटकर सिन्धी समाज की शरणार्थी से पुरुषार्थी एवं पुरुषार्थी से परमार्थी कहलाने की भावना को सार्थक रूप प्रदान करे ।

प्रसिद्ध सिन्धी नेता राम पंजवाणी ने अपने शुभकामना सन्देश में कहा कि सभ्यता का प्रारम्भ सिन्ध से हुआ, वेदों की ऋचायें ऋषियों ने सिन्धु नदी के किनारे बैठ लिखीं तो यह भी कितनी खुशी की बात है कि विश्व शांति का एवं नव विश्व निर्माण का

आबू पर्वत: अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धी रूहानी सम्मलेन का उद्‌घाटन दीप प्रज्वलित कर के किया जा रहा है।

शुभारम्भ भी सिन्ध के ही महान् महान् तपस्वी दादा लेखराज के द्वारा परमात्मा ने कराया । शुरू में लोग उन्हें पहिचान नहीं पाये, उनकी बात को समझ नहीं पाये, लेकिन आज इस चमत्कार को देखकर हमारी आंखें खुल गयी हैं कि सिन्ध के महान् सपूत का कार्य विश्व के कोने-कोने में फैल रहा है । उनकी तपस्या रंग ला रही है । उन्होंने कहा कि जो कुछ बीता उसे भूल जायें, अब हम सबका यह परम् कर्त्तव्य है कि हम विश्व के कोने-कोने में विश्व शांति के लिये सन्देश को फैलायें ।

अखिल भारतीय सिन्धी समाज, अजमेर के अध्यक्ष नानकराम इसरानी ने अपने सन्देश में कहा कि अब कलियुग जा रहा है, सतयुग आ रहा है । हम संगम पर खड़े हैं । यह विश्व परिवर्तन का समय है । अत: हम सभी अपने तमोगुणी खान-पान, आचार-विचार को बदलें और सतयुग लाने के कार्य में इन बहनों के साथ आ जायें ।

अखिल भारतीय फेडरेशन ऑफ सिन्धी शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष जे.जी. तिलवानी ने अपने सन्देश में कहा कि सिन्ध में सूफी संस्कृति एवं वेदान्त की रूहानी बातें चलती थीं लेकिन आज का सिन्धी पैसे का गुलाम हो गया है । ऐसे समय में सिन्ध की ही महान् ललनायें ब्रहमाकुमारी बहनों ने जो सिन्धी सम्मेलन यहां बुलाया है उसके लिये हमारा सारा सिन्धी समाज आभारी है । उन्होंने सिन्धीजनों का आव्हान किया कि विश्व के कोने-कोने में जो भी सिन्धी हैं वे सब यहां की राजयोग की शिक्षा को ग्रहण करें क्योंकि चाहे कितना भी धन हो जाय लेकिन यदि

भगवान् को याद नहीं किया तो जीवन बेकार है ।

अखिल भारतीय सिन्धी समाज के महामंत्री आचार्य प्रभुदास कुन्दनानी ने अपने सन्देश में कहा कि इतिहास दुहराया जा रहा है । शांति का सन्देश सिन्ध से ही पहले भी निकला था, आज भी वही दुहराया जा रहा है । विश्व शांति का स्त्रोत भी आदरणीय दादा जी के माध्यम से सिन्ध से ही फैला जो हमारे विश्व में फैलता जा रहा है ।

सुप्रसिद्ध लेखक एवं स्वतंत्रता सेनानी ताहिल राम आजाद ने गागर में सागर भरते हुए अपने सन्देश में कहा कि ब्रहमा बाबा एक युग-पुरुष थे जिन्होंने साधना, बुद्धि एवं लगन से यह विश्व परिवर्तन का कार्य किया है । हमें स्वयं को जानने एवं समय को पहचानने का सन्देश दिया है । आजाद ने कहा कि सिन्ध वह भूमि है जहां तपस्वी पैदा होते रहे हैं । ये ब्रहमाकुमारी बहनें दादी प्रकाशमणि जी स्वयं में एक संस्था है । मुझे गौरव है कि सिन्ध में एक देवी ने जन्म लिया जिसे सारा विश्व सम्मानित कर रहा है । सिन्ध एक अमन पसन्द लोगों की जन्मभूमि है, सिन्धी सदा अमन पसन्द रहता है । आनेवाले युग में जब इतिहास लिखा जायेगा तब ब्रहमाकुमारी बहनों का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा ।

सिन्धी समाज हांगकांग के उपाध्यक्ष शीतल, अमेरिका के सिन्धी समाज के सचिव रतन थाड़ानी, फ्रेण्ड्स ऑफ ओवर सीज़ सिन्धी के चेयरमैन एन.डी. गोलानी, दिल्ली प्रदेश सिन्धी समाज के जनरल सेक्रेटरी दयालसिंह बेदी, बम्बई सिन्धी पंचायत के अध्यक्ष अटल केसवानी, आल इंडिया सिन्धी समाज अजमेर के ईसर सिंह बेदी, सिन्धी क्लाथ मर्चेंट संघ के अध्यक्ष रमेश अलीत चन्दानी, उल्हास नगर म्युनिसिपल कमेटी के पूर्व अध्यक्ष प्रहलाद अड़वानी, विश्व हिन्दू परिषद् के खज़ान्ची हरीराम समतानी, बम्बई के प्रमुख पत्रकार रामकृष्ण अड़वानी, सौराष्ट्र के सिन्धी समाज के अध्यक्ष जयन्त जीवाराम रोलवानी, सिन्धी सभा एवं लायन्स क्लब के अध्यक्ष गुरसहानी आदि-आदि विश्व प्रसिद्ध सिन्धी नेताओं ने भी अपने शुभकामना सन्देश उपस्थित होकर दिये तथा विश्व शांति के लिये प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे कार्य में हर प्रकार से सहयोगी बनने का संकल्प लिया ।

सम्मेलन की अध्यक्षता दादी जानकी जी ने की । उन्होंने बाबा के कमाल का वर्णन किया कि आज बाबा का एक-एक महावाक्य सत्य सिद्ध हो रहा है जो ये सिन्धी भाई हमारे सामने उपस्थित होकर महिमा के गीत गा रहे हैं, सत्य की पहिचान दे रहे हैं ।

प्रसिद्ध उद्योगपति एवं बम्बई के राजनेता विधायक सन्मुख इसरानी ने अपने अनुभव में बताया कि दादी प्रकाशमणि ने प्रसाद देते समय मेरे हाथ का स्पर्श किया, उनके स्पर्श से ही मुझे बेहद शांति का अनुभव हुआ । इसी प्रकार दादी जानकी जी का लन्दन में प्रवचन सुनते मुझे एवं मेरी पत्नी को उनकी पवित्र भावनाओं ने तरंगित किया था और मेरे हार्ट का दर्द ठीक हो गया था, यह राजयोग का चमत्कार ही था ।

ब्रहमाकुमार निर्वैर भाई ने सभी का परिचय कराया, श्याम वासवानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया, संचालन ब्रहमाकुमारी जयन्ती बहन ने किया । □

आबू पर्वत:-विश्वशान्ति महासम्मेलन के खुले अधिवेशन में अपने विचार रखते हुए गुजरात विधान सभा के अध्यक्ष

परमात्मा के अवतरण की ज़रूरत

□ले.—ब्र.कु. चक्रधारी., दिल्ली

बच्चो, कुछ लोग, यह पूछते हैं कि संसार में परमात्मा के अवतरण की क्या आवश्यकता है? वे कहते हैं कि संसार में आचार्य, महात्मागण और उपदेशक तो बहुत हैं जो मनुष्य को अच्छी बात सुनाकर अथवा अच्छा उपदेश देकर उसका कल्याण कर सकते हैं। इस प्रकार के प्रश्न करनेवाले लोग परमात्मा के कार्य के महत्त्व को नहीं जानते। इस विषय में हमें एक छोटी-सी कहानी याद हो आती है।

कहते हैं कि एक बार एक बच्चा गांव के निकट किसी नदी में नहाने के लिए उतरा और उसने नहाना शुरू किया परन्तु उसके पांव फिसल गए और वह तैरना जानता नहीं था, इसलिए वह डूबने लगा। बेचारा हाथ-पांव मारने लगा और 'बचाओ, बचाओ' —इस प्रकार उच्च स्वर से चिल्लाने लगा। उसी समय उसकी कक्षा के आचार्य वहां किनारे से गुज़र रहे थे। उन्होंने देखा कि यह तो उनका एक शिष्य, मानवेन्द्र, डूब रहा है और जीवन-रक्षा के लिए हाथ-पांव मार रहा है। यह देखकर उन्हें गुस्सा आ गया। वे बोले—"तू बिल्कुल ही नालायक है। तुझे हजार बार हमने मना किया था कि तू चंचलता छोड़ दे और तू नदी में नहाने मत जाया कर और तू है कि हमारी बात मानता नहीं! अब जा यमलोक की हवा खा, तुझे आज्ञा भंग करने का नतीजा पता लग जाएगा।"

फिर वो आगे बोला—"अभी भी अगर तुम वचन दो कि आगे के लिए उच्छृङ्खलता नहीं करोगे तो मैं तुम्हें बचा लूंगा। बोलो, जल्दी बोलो, भविष्य में तो अनुशासन भंग नहीं करोगे ना...?

बच्चा डूबता जा रहा था, उसके मुंह में पानी भरता जा रहा था। वो बोलता कैसे? आचार्यजी उसको उपदेश करते जा रहे थे। वो कह रहे थे—"चरित्र बहुत ऊंची चीज़ है, परन्तु आजकल के बच्चे अनुशासन और चरित्र का अर्थ ही नहीं जानते...।"

इसी बीच एक दूसरे आचार्य महोदय वहां से गुज़रे। वे कुछ भी बोले नहीं बल्कि करुणा से प्लावित होकर तुरन्त कूद पड़े और बच्चे को बाहर निकाल किनारे पर ले आये। और प्यार पुचकार कर कहने लगे—"बेटा, तुम ठीक तो हो। घबराओ मत, सब ठीक हो जाएगा। आप बच्चों की रक्षा करना तो हमारा कर्त्तव्य है। बड़ों का काम ही होता है बच्चों की सेवा करना। तुम लोग ही तो हमारी उम्मीदों के तारे हो"—ऐसा कहते हुए वे उसे दुलार करने लगे।

बच्चे ने आंखें खोली और प्रेम-भरी दृष्टि से आचार्यजी की ओर देखते हुए उनकी ओर बांहें फैला दी। बच्चा उठ भी नहीं सकता था क्योंकि उसके पेट में पानी भर गया था और जी मिचला रहा था परन्तु उसका मन मौन की भाषा में बोल रहा था—कि ये केवल तुम्हारे आचार्य नहीं हैं बल्कि जीवनदान देनेवाले, प्राण दान देनेवाले, नवजीवन प्रदान करनेवाले महान्... महान्...महान्...हैं। उसका मन कहने लगा—ये हैं वो सच्चे आचार्य जो मुझसे सचमुच प्यार करते हैं। इनकी हरेक बात को मानने के लिए मैं सदा तैयार रहूंगा यहां तक कि जीवन भी दे दूंगा क्योंकि मुझ डूबते को बचानेवाले, नया जीवन देनेवाले यही तो हैं। हां, यही हैं। ऐसा सोचते हुए उसका मन प्रेम से पुलकित हो उठा और आज पहली बार एक आचार्य के प्रति उसके नेत्रों से प्रेम के आंसू प्रवाहित हो उठे...

तो बच्चो, परमपिता परमात्मा शिव ऐसे ही आचार्य हैं। जब मनुष्य इस संसार में विकारों में डूब रहा होता है तो पहले तो वे अपना सहारा देकर अपनी करुणा और प्रेम से उसे डूबने से बचाकर किनारे पर ले आते हैं। वे उसका मंगल-कुशल पूछते हैं। उसे मातृ-तुल्य, पितृ-तुल्य प्यार और दुलार देते हैं। प्रेम-भरे सच्चे मन से वे उसे निहारते हैं। वे उसे उपदेशकों की तरह डूबता देखकर भी उपदेश देने नहीं लग जाते और अपनी बात मनवाने का आग्रह नहीं करते। विकारों में डूबते देखकर भी वे उनका तिरस्कार नहीं करते बल्कि उन्हें निकालकर उन्हें गले लगाते हैं। वे उन्हें जीय-दान और प्राण-दान देते हैं कि उनका एहसान कोई भी नहीं भूल सकता। उनके बोल अमृत से भी ज्यादा मीठे होते हैं और उनके प्यार के आगे सारी दुनिया फ़ीकी होती है। वे डूबते हुओं को बचाने के लिए पहले कोई शर्त नहीं रखते बल्कि पहले वे उन्हें अपनाते हैं और मातृ वत पितृ वत उन्हें अगाध स्नेह देते हैं। इससे मनुष्य स्वत: ही न केवल उनकी शिक्षाओं को अपने मन से धारण करने का संकल्प करते हैं बल्कि उस जीवनदाता परमात्मा के लिए अपने जीवन की बाजी लगाने को भी तैयार हो जाते हैं।

शिव रात्रि ऐसा ही शुभ त्योहार है। ऐसे ही कल्याणकारी, प्रेम के सागर, पतित पावन, डूबतों को बचानेवाले, निर्बलों को सहारा देनेवाले, मन के सच्चे मीत उस परमपिता परमात्मा शिव के अवतरण की स्मृति में मनाया जानेवाला त्योहार है। भला उस प्राणाधार की शिक्षाओं को हम क्यों नहीं मानेंगे जिसने हमें यह नया जीवन दिया। □

राजयोग के वैज्ञानिक तरीके से व्यक्ति एवं समाज को तनाव मुक्त करके शांति लानी है

□बलराज जुयानी

माउण्ट आबू, 12 फरवरी। प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धी रुहानी सम्मेलन के खुले अधिवेशन में अपने विचार व्यक्त करते हुए सिन्धी चेम्बर ऑफ कामर्स गुजरात के अध्यक्ष बलराज जुयानी ने कहा कि आज सारा संसार,प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी कारण से तनावग्रस्त है। अणु युग में मानवता अपने अस्तित्व को बचाने में बेचैन है। भय, युद्ध, शोषण, लूट-खसोट का वातावरण है, विश्व में अनिश्चय एवं बेचैनी है कि पता नहीं कल क्या हो जाय? चारों तरफ तनाव-ही-तनाव है। उस तनाव का कारण मानव मूल्यों का ह्रास एवं स्वत्व की पहिचान का न होना है। इसका सही तरीका राजयोग है। उन्होंने कहा कि मैंने स्वयं ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा सिखलाये जा रहे राजयोग का अभ्यास किया है और अपने जीवन में तनावों से मुक्ति पायी है। अत: मैं कह सकता हूं कि यदि व्यक्ति एवं समाज को तनाव मुक्त कराना है एवं विश्व में शांति लानी है तो राजयोग की शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाना होगा।

दिल्ली की राजयोग शिक्षिका ब्रहमाकुमारी शांति ने सभा को राजयोग की क्रियात्मक अनुभूति करा के कुछ समय के लिये हज़ारों प्रतिनिधियों को शरीर के भान से परे तनाव की दुनिया से दूर शांतिधाम में पहुंचा दिया।

ब्राज़ील की पत्रकार ब्रहमाकुमारी डेनिज़ गोल्ड ने अपना अनुभव सुनाया कि मैं ब्लॅड कैंसर से पीड़ित रोग-शैय्या पर पड़ी थी। डॉक्टरों ने मेरे जीवित रहने की आशा छोड़ दी थी। लेकिन एक दिन किसी ने एक पर्चा मेरे बिस्तर पर रख दिया उसमें राजयोग द्वारा सभी रोगों एवं तनावों से मुक्त होने की बात लिखी थी। मैंने अपने माता-पिता से राजयोग केन्द्र पर ले चलने का आग्रह किया। वे मुझे स्ट्रेचर पर रखकर वहां ले गये। ब्रहमाकुमारी बहनों ने मुझे राजयोग का तरीका बताया, उससे मेरे जीवन में चमत्कार हो गया। मेरा ब्लॅड कैंसर धीरे-धीरे समाप्त हो गया। इस पर अमेरिका के सारे डॉक्टर आज भी चकित हैं कि राजयोग से यह कैसे चमत्कार हुआ? वे इस मेरे केस पर अन्वेषण कर रहे हैं। अत: मैं कह सकती हूं कि तनाव मुक्त जीवन का एकमात्र यह राजयोग ही है।

इस अधिवेशन में राजयोग टीचर्स ट्रेनिंग की प्रभारी ब्रहमाकुमारी मनोहर इन्द्रा ने संस्था की स्थापना एवं राजयोग के चमत्कार की कहानी सुनाई। दिल्ली की राजयोग शिक्षिका ब्रहमाकुमारी चक्रधारी, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के जनरल मैनेजर आर. एल. वाधवा, बम्बई ने भी राजयोग के महत्त्व पर प्रकाश डाला। अधिवेशन की अध्यक्षता संस्था की उपमुख्य प्रशासिका दादी निर्मल शांता जी ने की। संचालन ब्रहमाकुमारी शीला बहन, माउण्ट आबू ने किया। □

अर्न्तराष्ट्रीय सिन्धी सम्मेलन में १२ फरवरी के सायं खुले अधिवेशन में भ्राता बलराज जयानी अपने विचार रखते हुए।

विभिन्न वर्गों के लिये आयोजित की गई कार्यशालाऐं

कार्यशाला—संचार माध्यम पत्रकार

माउण्ट आबू, 12 फरवरी। प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धी रुहानी सम्मेलन में आये हुए पत्रकार प्रतिनिधियों के लिये एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें समाज की वर्तमान समस्याओं का आध्यात्मिकता द्वारा समाधान विषय पर विचार-विमर्श किया गया। इस गोष्ठी की अध्यक्षता संयुक्त राष्ट्र में ब्रहमाकुमारी संस्था की प्रतिनिधि ब्रहमाकुमारी मोहिनी, न्यूयार्क ने की। इस गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए बम्बई के शिक्षाशास्त्री एवं प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी ताहिलप्रसाद आज़ाद ने कहा कि राजसत्ता, सैनिक सत्ता, धर्मसत्ता के बाद चौथी सत्ता पत्रकारिता है। अत: यदि पत्रकार पहले अपने जीवन को राजयोगी बनाये, उसके बाद ही वे नैतिकता, आध्यात्मिकता का फैलाव अपने संचार माध्यमों के द्वारा करे तो निश्चय ही समाज एवं विश्व की समस्याओं का समाधान होगा। उन्होंने कहा कि ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय सर्व धर्मों का समभाव रखते हुए सम्मान करता है और बापू गांधी के रामराज्य के स्वप्नों को पूरा कर रहा है। ब्रहमाकुमारी बहिनें सारे विश्व की आध्यात्मिक तरीके से सेवा कर रही हैं। इनके पास नास्तिक भी आकर आस्तिक बन जाता है। उन्होंने विश्व के समस्त पत्रकारों का आव्हान किया कि वे यहां आकर सम्मेलन करें और विश्व नव निर्माण की ईश्वरीय योजना को समझें तथा विश्व भर में प्रसारित करें।

बम्बई के दैनिक हिन्दुस्तान (सिन्धी) के सम्पादक रामकृष्ण अडवानी ने कहा कि आज संचार माध्यमों पर जिनका नियन्त्रण है उनकी दृष्टि-वृत्ति ऐसी है कि वे आज विश्व स्तर पर आयोजित इस महान् कल्याणकारी सम्मेलन को नहीं देख सकते, न इसकी खबरें जनता को दिखा सकते हैं। जब कि यह संस्था जो भी कार्यकर रही है उसका पूरा लाभ सरकारों को ही मिलता है। जैसे यहां ब्रहमचर्य की शिक्षा दी जाती है उससे सरकार को परिवार नियोजन के कार्य में भारी सहयोग है जिस पर सरकार करोड़ों रुपया खर्च कर रही है फिर भी सफलता नहीं है। प्रदूषण की समस्या, राष्ट्रीय एकता, विश्व शांति आदि सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान राजयोग के अभ्यास से मिल जाता है परन्तु दूषित वृत्ति के कारण इसे लोग समझ नहीं रहे हैं। उन्होंने कहा कि सबसे पहले संवाददाता नारद था, दूसरा संवाददाता नाई बना, तीसरा संवाददाता हलकारा बना,

आबू पर्वत:-अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धी रूहानी सम्मेलन के अन्तर्गत 'संचार माध्यम' कार्यशाला में बोलते हुए भ्राता आर. के. अडवानी न्यूज़ एडीटर हिन्दुस्तान दैनिक (सिन्धी) बम्बई।

पृष्ठ २२ का शेष

के अनुकूल हमारी स्थिति वृत्ति, दृष्टि और कृति शुभ हो जाएगी। इन सबके शुभ होने के फलस्वरूप हमारा भविष्य—जो कि दिन और रात से बना है—भी शुभ हो जाएगा। यह हम केवल तर्क या सिद्धान्त के आधार से नहीं कहते बल्कि अपने तथा अन्य हज़ारों-लाखों लोगों के अनुभव के आधार पर कहते हैं।

जब हम मनुष्यों से गुड मार्निंग और गुड नाइट करते नहीं थकते तो क्या प्रतिदिन हम सोते समय स्वयं को आत्मा समझ ज्योतिस्वरूप परमात्मा—अपने परमप्रिय मात-पिता—को मन से मिलते हुए गुड नाइट नहीं कर सकते? क्या हमारे पास इतना भी समय नहीं कि जब हम प्रात: जगते हैं तो (पड़े-पड़े ही सही), हम अपने उस परमहितैषी से प्रेम और भावना-पूर्वक गुड मार्निंग कह दें? निश्चय ही ऐसी गुड मार्निंग और गुड नाइट सदा ही शुभ दिन लाने के निमित्त बन सकते हैं। फिर भी यदि हम ऐसा न करें तो हमारे नसीब! □

आबू पर्वत:-अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धी सम्मेलन के १३ फरवरी प्रात: के खुले अधिवेशन को सम्बोधित करती हुई ब्र. कु. दादी चन्द्रमणि, सहायक मुख्य प्रशासिका ब्र. कु. ई. वि. विद्यालय।

चौथे दौर में अखबार आया, पांचवें दौर में रेडियो, टेलीविज़न एवं टैलेक्स आया । उन्होंने सुझाव दिया कि यदि व्यावसायिक रूप से इन माध्यमों को धन देकर भी समाचार प्रसारित कराया जाय तो भी इससे समाज का आध्यात्मिक विकास होगा ।

ब्रहमाकुमारी रतन मोहिनी दादी ने कहा कि संसार परिवर्तनशील है । हमारा कर्म श्रेष्ठ है, भावना श्रेष्ठ है, तो हम नदु:ख देंगे न दु:ख लेंगे, न अशांत होंगे न अशांति फैलायेंगे, स्वधर्म में रहकर समस्याओं का समाधान करेंगे । इस गोष्ठी में सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी राजकोट के उपकुलपति प्रो. रसिकलाल बी. शुक्ला, दी इंडियन हांगकांग के मुख्य सम्पादक के. सीतल, सिन्धी साप्ताहिक के सम्पादक टी.जी. समतानी एवं प्युरिटी मासिक दिल्ली के सम्पादक ब्र.कु. बृजमोहन ने अपने पेपर पढ़े एवं आध्यात्मिकता द्वारा ही समाज की समस्याओं को समाप्त करने का तरीका बताया । दी आर्गेनाइज़र दिल्ली के पूर्व सम्पादक के.आर. मलकानी ने भी अपने विचार व्यक्त किये ।

गोष्ठी की अध्यक्षा ब्रहमाकुमारी मोहिनी, न्यूयार्क ने सबके विचारों का निष्कर्ष लेकर प्रस्ताव रखा कि यह स्वीकार किया गया कि आध्यात्मिक तरीके से ही समस्याओं का समाधान होगा । अत: संचार माध्यम इस प्रकार की खबरों को विशेष स्थान दें । गोष्ठी का संचालन लांस एंज़िल्स की ब्रहमाकुमारी डेनिस ने किया ।

कार्यशाला—उद्योगपति एवं व्यापारी

गोष्ठी का विषय ''तनाव रहित जीवन' था । इस गोष्ठी के अध्यक्षता फ्रेण्ड्स इण्टरनेशनल सिन्धी सोसायटी बम्बई के एन.डी. गोलानी ने की ।

इस गोष्ठी में बोलते हुए लन्दन के उद्योगपति रतन थाड़ानी ने कहा कि यदि किसी व्यक्ति के पास धन-धान्य है, भौतिक सुविधायें हैं परन्तु उसका शरीर बीमार है तो वह व्यक्ति कभी भी तनाव मुक्त जीवन नहीं बिता सकता । तन का रोग उसे बेचैन रखेगा । इसी प्रकार देखा गया है कि स्वीडन एक सम्पन्न देश है लेकिन वहां सबसे अधिक आत्महत्यायें होती हैं । क्योंकि उनके जीवन में तनाव बहुत रहता है । अपराधियों का अध्ययन करने पर पता चला कि वे मानसिक तनाव की स्थिति में ही अपराध करते हैं । मानसिक तनाव मस्तिष्क का दुश्मन है । अत: तनाव मुक्त होने के लिये राजयोग का तरीका सर्वश्रेष्ठ है जिससे लाखों लोगों ने तनाव मुक्त होकर जीवन शांतिमय, सुखमय, प्रेममय बनाया है ।

ब्रहमाकुमारी दादी जानकी, उपमुख्य प्रशासिका ने अपने अनुभव युक्त विचारों में बताया कि सादा जीवन उच्च विचार, पवित्र आचरण रखने से अपने को आत्मा समझ पिता परमात्मा को याद करने से तनाव समाप्त हो जायेगा ।

बम्बई के भूतपूर्व मेयर रावजी भाई गनाता, दुबई के विक्यामल सरॉफ, बम्बई के रेवा चन्द लखवानी, हांगकांग के अर्जुन मालवानी, बम्बई के गिरधारी डसूजा ने भी तनाव रहित जीवन बनाने पर विचार व्यक्त किये ।

कार्यशाला—महिलायें

महिलाओं के लिये आयोजित कार्यशाला की अध्यक्षता हांगकांग की कौशल्या मेलवानी ने की ।

इस गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए लन्दन की

महिला प्रतिनिधि कविता वासवानी ने कहा कि यदि परिवार में आपस में स्नेह नहीं है तो आदर्श सुखी गृहस्थ जीवन नहीं बन सकता है। उसके लिये राजयोग की शिक्षा की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि मैं पिछले 12 वर्षों से राजयोग का अभ्यास कर रही हूं इससे मेरा गृहस्थ जीवन सुख-शांतिमय बन गया है। मैं तथा मेरे पति एवं पूरा परिवार प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के केन्द्र पर जाकर शिक्षा लेते हैं।

दिल्ली की राजयोग शिक्षिका ब्रहमाकुमारी आशा बहन ने बताया कि आश्रम वह स्थल है जहां शांति है, पवित्रता है, अनुशासन है। यदि यही बातें मातायें-बहनें अपने गृहस्थ में ले आयें तो उनका परिवार भी आदर्श गृहस्थ आश्रम बन सकता है और यह राजयोग के अभ्यास एवं ईश्वरीय ज्ञान से ही हो सकता है। आदर्श गृहस्थ वह गृहस्थ है जहां भौतिक एवं अध्यात्म का समन्वय है। हमारे देवी-देवताओं को भी युगल रूप में दिखाया जाता है जैसे कि लक्ष्मी नारायण, सीता राम आदि-आदि। इस गोष्ठी में मोदी इण्टरप्राइजेस परिवार की मुख्या श्रीमती गायत्री मोदी, बम्बई की पार्वती अड़वानी, न्यूयार्क की ब्रहमाकुमारी गायत्री, हांगकांग की प्रभा वासवानी, सहेली संगठन की अध्यक्षता सती देवीदास, पूना की ब्रहमाकुमारी बृजशान्ता, नैरोबी की ब्रहमाकुमारी वेदान्ती, कर्नाटक की ब्रहमाकुमारी हृदयपुष्पा ने भी अपने विचार रखे। □

आबू पर्वत: ब्र. कु. जगदीश चन्द्र जी गोल्डन जुबली समारोह के अवसर पर दादी प्रकाशमणि जी को अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए।

अब की बार

(ब्र. कु. राजकुमारी, मज़लिस पार्क, दिल्ली)

अ ब की बार कुछ नयां अजब कमाल हो गया।
आबू सम्मेलन का हर मेहमान महान् हो गया।।
हर नयन झुका, हर पलक भीगी, हर कोर नम हुई।
हर हृदय पसीजा, हर आवाज सिहरी, हर रुह धुल गई।।
आदि देव ब्रहमा बाप प्रत्यक्ष आज हो गया।
अब की बार कुछ नया अजब कमाल हो गया।।
भ्रांतियां मिटीं, अखियां खुलीं, जगा नर जो था सो गया।
आध्यात्मिक क्रान्ति का स्वर देखो कितना मुखर हो गया।।
हर पांव थिरका, पावनता अब हर मन का संकल्प हो गया।
स्वर्णिम अवसर का पल-पल स्वर्ण हो गया।।
अब की बार कुछ नया अजब कमाल हो गया।
सिन्धी भी आए, हिन्दी भी आए; अंग्रेज़ी भी आए,
अफ़्रीकी भी आए, संन्यासी भी आए, प्रन्यासी भी आए;
नेता भी आए, प्रणेता भी आए।।
सच! हर एक का मन्त्र वहां ओमशान्ति हो गया।
अस्तित्व हरेक ओमशान्ति हॉल में खो गया।।
अब की बार कुछ नया अजब कमाल हो गया।
ईश्वरीय करिश्मों की झलक, वो स्वर्ण जयन्ती का मनाना।।
शिव शक्तियों की फलक, वो त्याग, तपस्या का अफ़साना।
फरिश्तों के मेले और फिर 'मेले' का सजाना।।
स्वर्ण युग की जयन्ती का नया सबेरा हो गया।
अब की बार कुछ नया अजब कमाल हो गया।।
स्वर्णिम विचारों का अनोखा ऐसा इज़हार हो गया।
अशान्ति के संस्कारों का देखा संस्कार हो गया।।
प्रभु पसंदों का यह दिन आखिर ईजाद हो गया।
पचास वर्षीय बीज आज वृक्ष फलदार हो गया।।
अब की बार कुछ नया अजब कमाल हो गया।
वी.आई. पीज़ का 'वी.आई.पी. परम् पवित्र आकर्षक।
आया था वो दिलवर ऊपर से हमें देने मुबारक।।
वरषाया अमृत औ भर गया नयनों में इबादत।
खिलाई दिल खुश मिठाई औ सौगात अलौकिक दे गया।।
अब की बार कुछ नया अजब कमाल हो गया।
स्वर्णिम प्रकाश एक आंख में दूसरी में दुनिया स्वर्णिम संजो गया।
आत्मिक मान दान और स्वमान के माणिक पिरो गया।
मिला उपहार स्वर्ण जयन्ती का हर एक को ऐसा।।
एक दिवसीय योगी का जनम भी स्वर्ण हो गया।
अब की बार कुछ नया अजब कमाल हो गया।।

शुभ रात्रि ! शुभ रात्रि !!

□ले.—ब्र.कु. सुधा, शक्तिनगर, दिल्ली

आमतौर से जब दो व्यक्ति रात्रि को एक-दूसरे से छुट्टी लेते हैं तो शिष्टाचार के नाते से वे एक-दूसरे के प्रति मंगल कामना करते हुए कहते हैं ''गुड नाइट (Good Night)—शुभ रात्रि !'' इसी प्रकार जब वे दिन में मिलते हैं तो चेहरे पर मुस्कुराहट लाते हुए एक-दूसरे को अभिवादन करते हुए कहते हैं, ''गुड मार्निंग (Good Morning)—शुभ दिवस'' । एक-दूसरे के प्रति मंगल कामना व्यक्त करना तो अच्छी ही है परन्तु हम प्राय: देखते हैं कि मनुष्य सोचता कुछ और है और होता कुछ और है । गुड मार्निंग कहकर अलग होते हुए दो व्यक्तियों में से कभी-कभी किसी व्यक्ति की दुर्घटना हो जाती है या दूसरा कहीं किसी आपदा में ग्रस्त हो जाता है क्योंकि इस कलियुगी संसार में रोग-शोक, दुख तथा दुर्घटनाओं का बाजार गर्म है । इसी प्रकार रात्रि को दो व्यक्ति गुड नाइट कहकर सोते हैं परन्तु कौन जानता है कि वह रात कैसे गुज़रेगी ! अभी कुछ ही समय पहले की तो बात है कि नई देहली के प्रसिद्ध सिद्धार्थ होटल में कितने ही सुशिक्षित लोग रात्रि को गुड नाइट शुभ रात्रि कह और सुनकर सोये होंगे कि उनके सोये-सोये होटल को आग लग जाने से वे दूसरे दिन सूर्य का दर्शन भी नहीं कर सके !

हमारे कहने का यह भाव नहीं है कि गुड मार्निंग और गुड नाइट—'शुभ दिवस' और 'शुभ रात्रि' से एक-दूसरे का अभिवादन न किया जाए । हमें मंगल कामना तो व्यक्त करनी ही चाहिए परन्तु हमारे कहने का भाव यह है कि हम आत्माओं के मिलने और बिछुड़ने पर और शुभ कामनाएं व्यक्त करने पर भी हरेक का भला-बुरा उसके अपने कर्म के अनुसार उसे भोगना ही पड़ता है।परन्तु एक मिलन ऐसा है जिसके बाद मनुष्य का स्थाई रूप से कल्याण हो जाता है और उसके लिए हज़ारों दिन शुभ दिन और हज़ारों रात्रियां शुभ रात्रियां हो जाती हैं । हां, शर्त केवल इतनी है कि उस न्यारे मिलन को हम समझें और उसकी अपनी दिव्य रीति के अनुसार उसे मनायें और मंगल कामना करें । प्रश्न उठता है कि वह न्यारा मिलन कौन-सा है और उसकी दैवी रीति क्या है ?

एक नई प्रकार का गुड मार्निंग और नई प्रकार की गुड नाइट

नई प्रकार की गुड मार्निंग और गुड नाइट को समझने से पहले भगवान् के उस महावाक्य की ओर ध्यान देने की जरूरत है जिसमें उन्होंने कहा है कि ''मैं धर्म-ग्लानि के समय अवतरित होता हूं और अपना सत्य परिचय देता तथा योग भी सिखाता हूं ।'' इसके साथ ही तनिक विचार कीजिए कि जब मात-पिता, बन्धु सखा और मन के सच्चे मीत परमात्मा इस सृष्टि पर आते होंगे, तब क्या उनका परिचय प्राप्त करनेवाली मनुष्यात्माएं रूपी सन्तान उनका अभिवादन नहीं करती होंगी ! वे उनसे 'गुड मार्निंग' या 'गुड नाइट' या इस प्रकार के अन्य कोई शब्द से प्रेम-अभिव्यक्ति नहीं करते होंगे !

वास्तव में उस परमपिता परमात्मा से परिचय-पूर्वक मिलकर ही तो मनुष्य के सभी दिन शुभ दिन हो जाते हैं और सभी रात्रियां मंगलमय हो जाती हैं और मनुष्य के भाग्य ही सदा के लिए खुल जाते हैं । तभी तो कहा गया है कि 'शिव के भण्डारे भरपूर, काल-कण्टक सब दूर' ।

अत: हमें याद रखना चाहिए कि शिव रात्रि ही वास्तव में ऐसी शुभ रात्रि है, जब शिव परमात्मा के अवतरण से संसार से अज्ञानान्धकार मिट जाता है और पवित्रता सुख शान्ति सम्पन्न सतयुगी सवेरा निकल आता है । उस अज्ञान रात्रि में ज्योतिस्वरूप शिव के अवतरण से मनुष्य की जो ये तीन इच्छाए हैं—तमसो मा ज्योतिर्गमय (मैं अन्धकार से प्रकाश की ओर जाऊं), मृत्यों मा अमृतंगमय (मैं मृत्यु से अमरत्व की ओर जाऊं) और असतो मा सद्गमय (मैं असत्य से सत्य की ओर जाऊं)—ये पूरी हो जाती हैं ।

परन्तु आज मनुष्य को उस परमपिता परमात्मा शिव का परिचय ही नहीं और न ही उसके अवतरण के समय का सत्यज्ञान है वरना यह जानकर उस प्रभु से मिलन मनाने से उसके शुभ दिन आ जाते और हर मार्निंग—गुड मार्निंग तथा हर नाइट—गुड नाइट हो जाती ।

अब हमें उस परमपिता परमात्मा ने यह सत्य परिचय दिया है कि वर्तमान समय कलियुग की अत्यन्त अन्धेरी रात है और इसके बाद सतयुगी दिन चढ़नेवाला है और अब इन दोनों के बीच ज्ञानवान आत्माओं के लिए शुभ संगम युग है ।

अब इस संगम युग में जो कि परमात्मा का अवतरण युग है, हम हर रात्रि को जब सोते हैं तो ज्योतिस्वरूप बिन्दु रूप, कल्याणकारी मात-पिता अथवा सखा-स्वामी से गुड नाइट कहकर सोते हैं और फिर अगली प्रात: को जब आंख खुलती है तो सबसे पहले स्वयं को आत्मा समझ और उस परमपिता परमात्मा को सम्बोधित करके स्नेहपूर्ण सम्बन्ध से हम नित्य प्रति उससे गुड मार्निंग करते हैं । ऐसा हम इस विचार से नहीं करते कि परमात्मा का शुभ भविष्य हो बल्कि इस निश्चय से करते हैं कि उस मंगलमय परमात्मा की स्मृति और सम्बन्ध से हमारा भी कल्याण हो जाएगा । क्योंकि 'जैसा संग वैसा रंग' की उक्ति के अनुसार और 'जैसी स्मृति वैसी स्थिति' के नियम

शेष पृष्ठ १९पर

एक अलग प्रकार का अनोखा विश्व-विद्यालय

मुख्यालय : पाण्डव भवन, माउण्ट आबू

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय बहुत-सी बातों में अन्य विश्व-विद्यालयों से विभिन्न प्रकार का है । यह उन्नति के शिखर पर बढ़ता हुआ अब एक विश्व-ख्याति प्राप्त तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का एक अनोखा विश्व-विद्यालय माना जाने लगा है ।

इसकी शिक्षाओं को विश्व-व्यापी मान्यताएं

इसकी शिक्षाओं के विस्तार का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पिछले 13 वर्षों में इसके शिक्षा-केन्द्र तथा उप-शिक्षा केन्द्र पांचों महाद्वीपों के 48 देशों में स्थापित हो चुके हैं जिनकी संख्या लगभग 1500 है । निम्नलिखित कारणों से इसे भिन्न प्रकार का (अनोखा) विश्व-विद्यालय कहा जा सकता है:—

(1) इसकी शिक्षा द्वारा नकारात्मक वृत्ति तथा भेदभाव से छुटकारा मिलता है ।

इसकी शिक्षाओं का मुख्य उद्देश्य मानव को वास्तविक मानव बनाना है अर्थात् प्रत्येक मानव में नम्रता, सहनशीलता, वास्तविकता को पहचानना तथा मानवता का व्यवहार करना सिखाया जाता है और उसे सत्यता की लग्न के साथ खोज करने में संलग्न किया जाता है । इस विश्व-विद्यालय के सिद्धान्तों के अनुसार अगर एक मनुष्य सांसारिक शिक्षा चाहे कितनी ही ऊंची प्राप्त कर लेता है लेकिन अगर उसमें नम्रता, सहनशीलता आदि सद्गुण नहीं हैं और जो ईर्ष्या-द्वेष, क्रोध, अहंकार आदि अवगुणों से ग्रसित है, वह वास्तव में पढ़ा-लिखा मानव नहीं कहला सकता । क्योंकि भारतीय संस्कृति में शिक्षा की प्राचीन व्याख्या के अनुसार 'विद्या' का अर्थ ही 'विनय' अर्थात् नम्रता और विद्या से ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, अहंकार आदि अवगुणों से छुटकारा मिलता है । लेकिन प्राय: यह देखा गया है कि आज के पढ़ा-लिखा मानव में ये सभी बुराईयां धार्मिक, राजनैतिक, भाषा या रंग-भेद के रूप में विद्यमान हैं और इसी कारण विश्व में उथल-पुथल व लड़ाई-झगड़ा होता रहता है । **क्या साऊथ अफ्रीका का झगड़ा; मिडिलईस्ट की उथल-पुथल, दो महाशक्तियों में आणुविक हथियारों की होड़ तथा भारत में जाति-पाति की लड़ाई इन्हीं कारणों से नहीं है ?**

यहां पर हम वास्तविक तौर पर व्यवहारिक जीवन के बारे में भी कुछेक शब्द कहना चाहेंगे । कोई मनुष्य पढ़-लिखकर विद्वान भले ही बन जाय लेकिन उसका व्यवहारिक ज्ञान जरूरी नहीं कि इतना उन्नत हो कि वह अनासक्त भाव से किसी बात का निर्णय कर सके । इसलिये उसका निर्णय सही और उचित नहीं होता है । इसी कारण ऐसे मनुष्य के विचार व विश्वास गलत धारणाओं पर आधारित होने कारण उसका निर्णय भी गलत हो सकता है । इस प्रकार का मनुष्य समस्याओं का निश्चल और शान्त भाव से समाधान करने में असमर्थ होता है बल्कि ऐसे अवसरों पर घबरा जाता है । ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय इस प्रकार के सद्गुणों की धारणा कराता है, जो व्यवहारिक जीवन में बहुत उपयोगी होती हैं । ना कि उसके दिमाग को अनेक प्रकार की जानकारी व निरर्थक बातों से बौझिल बनाता है ।

इस विश्व-विद्यालय का विश्वास है कि मानव ज्ञान और विज्ञान की कलाओं का चाहे कितना भी ज्ञाता क्यों न हो जाय लेकिन अगर उसने व्यवहारिक जीवन यापन करने की कला नहीं सीखी है वह वास्तव में सुखी जीवन व्यतीत नहीं कर सकता है । क्योंकि शिक्षा जीवन को सुखी बनाने के लिये होनी चाहिए न कि केवल नौकरी अथवा कोई धन्धा दिलाने का इसका उद्देश्य होना चाहिए ।

(2) यहां पर शान्ति दिलाने तथा 'चरित्र निर्माण' करने की शिक्षा दी जाती है ।

दूसरी विशेषता इस विश्व-विद्यालय की यह है कि यहां पर चरित्र-निर्माण तथा शान्ति स्थापन करने पर विशेष जोर दिया जाता है । एक प्रसिद्ध कहावत भी है कि "अगर चरित्र गया तो

सब-कुछ गया ।'' इसके अतिरिक्त इस विश्व-विद्यालय का यह भी विश्वास है कि 'अगर शान्ति गई तो अन्य सभी प्राप्तियां व्यर्थ और बेकार हैं ।' अत: इसकी मान्यताओं के अनुसार विश्व-विद्यालय में ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे मानव जीवन में आनेवाली घटनाओं का शान्त व एकाग्र मन से सामना कर सके और चरित्र की अटल चट्टान की तरह तूफानों को पार करता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर हो सके । क्योंकि ऐसा ही मानव अपना और देश का भला कर सकता है ।

इसकी भेंट में अगर कोई मनुष्य बहुत अधिक पढ़ा-लिखा है लेकिन उसे नैतिक शिक्षा तथा शान्ति की प्राप्ति नहीं है और वह चरित्रहीन है तो समाज का कल्याण करने के बजाय वह समाज का अकल्याण ही करेगा और उस पर बोझा ही सिद्ध होगा । ऐसा मानव समाज या देश की समस्याएं सुलझाने के बज़ाय उन्हें बढ़ायेगा ही ।

आज जो देश में भ्रष्टाचार व्यापक है तथा सरकार के गरीब लोगों के रहन-सहन को ऊंचा उठाने, जनसंख्या की वृद्धि रोकने अथवा बेरोज़गारी की समस्या को दूर करने के प्राय: सभी उपाय विफल हो रहे हैं उनका मुख्य कारण चरित्रहीनता ही है अत: यह विश्व-विद्यालय ऐसी शिक्षा प्रदान करता है जिससे चरित्र का निर्माण होता है और इस प्रकार अनेक सामाजिक व आर्थिक बुराईयों को जड़ से उखाड़ने में सहयोग देता है ।

(3) यहां मनुष्य को मानव-कल्याण की भावना तथा सर्व प्रकार की उन्नति प्राप्त करने की शिक्षा दी जाती है ।

इस विश्व-विद्यालय का यह भी मत है कि मनुष्य की बहुमुखी सर्वोन्नति की शिक्षा देना ही शैक्षणिक संस्था अथवा शिक्षक का लक्ष्य होना चाहिए । लेकिन प्राय: देखा गया है कि वर्तमान शिक्षा के ढांचे के अनुसार लोक-कल्याण या समाज-कल्याण की भावना पैदा करने के बजाय मनुष्य स्वार्थी बन जाता है और वह स्व उन्नति पर अधिक ध्यान देता है । इसी कारण उनके जीवन में आपस का तनाव बढ़ता जाता है और एक-दो के प्रति सहयोग की भावना, दयालुता या एक पारिवारिक स्नेह की भावना प्राय: लोप होती जा रही है । ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ऐसा मानता है कि इन सद्गुणों के अभाव के कारण ही विश्व 'विनाश के कगार' पर खड़ा है और इसलिये यह संस्था निरन्तर इसी प्रयास में लगी हुई है कि इस कमी (अभाव) को दूर करके लोगों के जीवन में सद्गुणों का समावेश कराया जाये ।

(4) यहां ऐसी सम्पूर्ण शिक्षा दी जाती है जो 'वर्तमान संकटों' से छुटकारा दिलाती है ।

अत: यह एक अनोखा विश्व-विद्यालय है जहां पर वर्तमान शिक्षा के ढांचे में जो कमियां हैं उसे दूर करके मानव की सर्वांगीण उन्नति ला सके । दूसरे विश्व-विद्यालयों में जो शिक्षा दी जाती है, उन विषयों की शिक्षा यहां नहीं दी जाती है क्योंकि वह केवल उनकी नकल करना अथवा उनके द्वारा किये जा रहे विफल प्रयास ही होंगे । बल्कि यहां पर उन विषयों में शिक्षा दी जाती हैं जिनका वर्तमान समय के संकटों से सीधा सम्बन्ध है । यहां जो शिक्षा दी जाती है, देखने में चाहे वह केवल आध्यात्मिक लगती हो लेकिन इसमें नैतिकता, धार्मिकता, व्यवहारिकता, सिद्धान्तवाद तथा विश्व के इतिहास, भूगोल, संस्कृति, राजनैतिक विज्ञान आदि का सुन्दर सम्मिश्रण है इससे मानव में और सभी प्रकार की कलाएं और विज्ञान की वास्तविक समझ (बुद्धि) आ जाती है । वास्तव में यहां ऐसी शिक्षा दी जाती है जो सभी प्रकार की शिक्षाओं व विषयों का एक अनोखा मिसाल है । अत: यहां पर मानव के सम्पूर्ण विकास के लिये शिक्षा दी जाती है न कि अधूरी अथवा किसी एक विषय को लेकर उसे पढ़ाया जाता है । अत: यहां मानव की बुद्धि का विस्तार किया जाता है व बेहद की बुद्धि बनाने में मदद दी जाती है न कि उसकी संकुचित विचारधारा बनाई जाती है । इसी प्रकार वर्तमान समाज की सभी समस्याओं के हल का यहां नवीन प्रकार का उपाय बताया जाता है ।

अत: ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय एक भिन्न प्रकार का विश्व-विद्यालय है । इसकी एक विशेषता यह भी है कि इसका संचालन अधिकतर महिलाओं द्वारा ही होता है, जिनके जीवन में त्याग, तपस्या, सेवा, समर्पण की भावना समाई होती है और जो नि:स्वार्थ भाव से सारे समाज की सेवा बिना किसी जाति, धर्म, भाषा व रंग के भेदभाव से करती हैं । इसके लिये विद्यार्थियों से कोई फीस भी नहीं ली जाती है । इस प्रकार यह विश्व-विद्यालय के साथ-साथ प्राचीन काल के 'ऋषिकुल' के समान है जिससे विद्यार्थी और शिक्षक में आपसी गहरा सम्बन्ध रहता है और शिक्षक जीवन सम्बन्धी सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर अपने विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान

करता है । अत: यह ऐसी संस्था है जिसकी चाहना सभी वर्ग के लोग रखते हैं फिर चाहे वे समाज-सुधारक हों, चाहे शिक्षाविद हों, अथवा विद्यार्थियों के माता-पिता, अभिभावक अथवा स्वयं विद्यार्थी ही क्यों न हों ?

यहां किसी प्रकार का सर्टीफिकेट, डिप्लोमा, या डिग्री नहीं दी जाती है जैसा कि प्राचीनकाल में होता था, क्योंकि इनसे विद्यार्थी की बुद्धि, चाल-चलन, व्यवहारिक जीवन, समाज व देश के प्रति स्नेह की भावना आदि का सही मूल्यांकन नहीं होता है । आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नत मानव को इन सर्टीफिकेट आदि की आवश्यकता भी नहीं होती है क्योंकि उसका अपना ही जीवन लोगों के सामने सर्टीफिकेट (आदर्श) होता है । अरिस्टोटल, कोपरनिकस, न्यूटन, आईन्स टाईन आदि महान् व्यक्तियों का जीवन ही इस प्रकार की डिग्रियों से महान् था । इसी प्रकार महात्मा गांधी, विवेकानन्द, बुद्ध इतने महान् थे कि उनकी महानता को सर्टीफिकेट प्रदान करके नापना उनका एक प्रकार से अपमान करना ही होगा ।

इस विश्व-विद्यालय के ऐसे ही सिद्धान्त हैं और यह मानव मात्र के चरित्र और समाज के उत्थान का कार्य ऐसे समय में कर रहा है जबकि समाज में ऐसे महान् चरित्रवान व्यक्तियों की कमी महसूस की जा रही है ।

(5) अन्तर्मुखी ज्ञान और एक ही विषय में सीमित न होकर सभी प्रकार के अनुशासन और विकास को लानेवाली शिक्षा

आज ऐसे विश्व-विद्यालय की भी आवश्यकता है जहां अनेकानेक विश्व-विद्यालयों में दी जा रही शिक्षाओं और उनके कार्यप्रणाली का विवेचन किया जा सके । एक प्रकार के अनुशासन का अन्य प्रकार के अनुशासनों से सम्बन्ध होने के कारण उनका समन्वय जरूरी है । इसी प्रकार जीवन के अनेक पहलुओं में काम आनेवाले अनुशासनों तथा सिद्धान्तों का मेल जरूरी है । उनकी सामाजिक आवश्यकता तथा वे समाज की समस्याओं को कैसे हल कर सकते हैं, इन पर ध्यान देना भी आवश्यक है । हमें देखना है कि क्या ये सिद्धान्त (विश्वास) सम्पूर्ण (ज्ञान) विकास में सहायक सिद्ध होंगे । इस प्रकार की पढ़ाई एक ही विषय में सीमित नहीं रह सकती बल्कि सभी प्रकार की शिक्षा व समझ देनेवाली होनी चाहिए । और यह केवल ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में ही दी जाती है ।

वास्तव में यहां पर जो पढ़ाया जाता है वह ईश्वरानुभूति के आधार पर ही सिखाया जाता है । यहां विभिन्न प्रकार के विषयों में पारंगत विद्यार्थी इन ईश्वरीय सिद्धान्तों और अनुभवों का अपने-अपने विषयों में विवेचन करके अपनाते हैं और अपने जीवन में नवीनता की लहर व, नवीन ज्योति का अनुभव करते हैं ।

(6) यहां ऐसी शिक्षा दी जाती है जिससे मानव का मन पर कन्ट्रोल होता है और उसके जीवन में अनेक प्रकार की कमियां दूर होती हैं ।

सर्वोपरी इस विश्व-विद्यालय की यह मान्यता है कि वर्तमान शिक्षा-प्रणाली के प्राकृतिक और जीव-प्राणी विज्ञान, अर्थशास्त्र और व्यापार, कम्प्यूटर ज्ञान, सांख्य ज्ञान, आदि विषयों पर अधिक ध्यान दिया जाता है जबकि अन्य क्षेत्रों का ज्ञान जैसे कि मानवता और आध्यात्मिक व नैतिकता की शिक्षा को जान-बूझकर पढ़ाई के विषयों से निकाल दिया गया है । इसके कारण मानव के बहुमुखी विकास में और समाज को भी बहुत हानि हुई है । जबकि मनुष्य की विज्ञान में अथाह प्रगति हुई है लेकिन उसका आध्यात्मिक क्षेत्र में पतन ही हुआ है जिसके परिणामस्वरूप उसका प्रकृति की शक्तियों पर तो कन्ट्रोल हुआ है लेकिन अपने मन पर कन्ट्रोल नहीं है । और इसीलिये विज्ञान की देन अणुबम्ब आदि द्वारा एक बटन दबाने से सारे विश्व का विनाश हो सकता है । अत: मनुष्य का मन पर कन्ट्रोल अति आवश्यक है ।

इस विश्व-विद्यालय में स्वयं के बारे में ज्ञान दिया जाता है

इसके अतिरिक्त, क्या स्वयं के बारे में ज्ञान इतना ही आवश्यक नहीं है जितना अन्य विषयों के बारे में ? क्या आत्मा की आन्तरिक स्थिति की खोज करना आवश्यक नहीं है ? ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मान्यता है कि वर्तमान समय की प्राय: सभी समस्याओं का कारण भी यही है कि हम अपने को भूल चुके हैं । अत: यहां यही बताया जाता है कि शिक्षा का पहला उद्देश्य यही होना चाहिए कि मनुष्य को मालूम हो कि "मैं कौन हूं ? कहां से आया हूं और कहां मुझे वापिस जाना है ?" अत: यहां पर इसके बारे में भी शिक्षा दी जाती हैं ताकि मनुष्य के मन का कौतुहल इन सवालों का उत्तर पाकर शान्त हो सके ।

यहां पर यह बताना जरूरी हो जाता है कि विश्व के अनेक प्रसिद्ध वैज्ञानिकों का भी यही कथन है कि मन, आत्मा और बुद्धि के बारे में ज्ञान मानव के बहुमुखी विकास के लिये अति आवश्यक है ।

नोबल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक रोज़र स्प्रे ने 1981 में अपने लेख "परिवर्तित आवश्यकताएं" (Changing Priorities) में लिखा है कि:— "आत्मा (मन-बुद्धि) के बारे में वर्तमान मान्यताओं के आधार से उन पुराने आर्थिक व व्यवहारिक सिद्धान्तों का खण्डन होता है जो अभी तक सदियों से मानसिक विज्ञान पर हावि थे। आत्मा तथा मन-बुद्धि (चैतन्यता) की नवीन व्याख्या के अनुसार इसका (व्यवहारिक ज्ञान) मानव के जीवन का आवश्यक अंग बताया है न कि इसको तिलान्जली दी है ।" उसने आगे लिखा है:— "सामाजिक मूल्यों का आधार... हैं यह मान्यता कि क्या चैतनशक्ति (आत्मा) विनाशी है, अविनाशी है, पुर्नजन्म लेती है,...सर्व व्यापी है... या उसका एक ही स्थान पर 'भृकुटी' में निवास है आदि-आदि ।"

स्पष्ट है कि उसने आत्मा (चेतन्ता) को जानने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है क्योंकि उसके जानने से ही सर्व प्रकार के विज्ञान व कला की जानकारी सहज ही प्राप्त हो सकती है ।

इसी प्रकार, सर जोन एकलस, दूसरा 'ब्रेन वैज्ञानिक' (जिसने भी नोबल पुरस्कार प्राप्त किया हुआ है) अपनी "स्वयं और उसकी बुद्धि" (The Self and its Brain) नामक पुस्तक में 'सर कार्ल पोपर' से वार्तालाप के रूप में लिखा है कि "मेरी मान्यता के अनुसार आत्मा-दिमाग से भिन्न है...और मैं 'रोज़र स्प्रे' के मत से सहमत हूं कि "मन को तत्त्वों से ऊपर स्थान देना चाहिए तथा उसे अपनी पुरानी ऊंची पदवी पर आसीन करना चाहिए... ।"

(7) यहां पर 'दिव्य बुद्धि' पर आधारित तथा परमात्मा द्वारा प्रदान की जानेवाली व्यवहारिक तथा यथार्थ शिक्षा दी जाती है ।

इस संस्था में दिव्य बुद्धि से प्राप्त अनुभवी ज्ञान दिया जाता है, जो कि विज्ञान की कसौटी पर भी खरा उतरता है । "दिव्य बुद्धि" द्वारा प्राप्त इस ज्ञान को 'जीवन-विज्ञान' अथवा 'जीवन-सिद्धान्त की कला' भी कहा जा सकता है । हम यहां उनमें से कुछेक विषयों का वर्णन कर रहे हैं हालांकि इस संस्था में इन विषयों को अलग-अलग विषय मानकर नहीं पढ़ाया जाता हैं बल्कि उनका ज्ञान सम्मिलित रूप से व्यवहारिक जीवन के लिये अति आवश्यक है । इन विषयों को निम्नलिखित रूप में बांटा जा सकता है:—योग, इतिहास, नैतिकता, सिद्धान्त, धार्मिक-राजनैतिक शिक्षा आदि । हालांकि इसके अलावा अन्य भी कई विषयों की जानकारी यहां दी जाती है जैसे कि भूगोल, 'जीवन विज्ञान', 'फिज़िक्स, ज़ियोलोजी', 'एनट्रोपोलोजी' आदि-आदि । प्रकृति, आत्मा, मन, परमात्मा व अन्य संसार के बारे में विवेचन तथा कुछेक मान्यता प्राप्त सिद्धान्तों (फिलासोफी) पर मनन चिन्तन ।

(1) चेतनशक्ति आत्मा क्या है ? मैं कौन हूं ? और मेरा वास्तविक परिचय क्या है ?

(2) प्रकृति और पुरुष या क्षेत्रिय और क्षेत्रज्ञ अथवा शरीर और आत्मा का अन्तर ।

(3) मन, बुद्धि, स्मृति और संस्कार का स्वभाव क्या है ? क्या वे पार्थिव या प्राकृतिक पदार्थ हैं या 'ब्रेन' के हिस्से हैं ? क्या ये आत्मा के सूक्ष्म अंग हैं ? या आत्मा इनके द्वारा कर्म करनेवाली चेतनशक्ति है ? क्या ये 'मनोमयकोष', 'विज्ञानमयकोष' के अलग-अलग नाम हैं ? अथवा ये सभी आत्मा के विभिन्न अंग अथवा शक्तियां हैं ? क्या ये अलग-अलग शरीर की अलग-अलग अवस्थाओं के नाम हैं ? जैसे कि एस्ट्रेल शरीर (astral body); कैज़ुअल बोडी (casual body) आदि-आदि । अथवा क्या ये आत्मा से अलग न होकर उसकी अपनी ही शक्तियों के नाम हैं ?

(4) मन व शरीर का सम्बन्ध अथवा शरीर और आत्मा का क्या सम्बन्ध है ? तन में आत्मा का निवास कहां है ? क्या यह दिल में रहती हैं ? भृकुटी में रहती हैं या मस्तक में रहती है ?

(5) क्या आत्माएं अनेक हैं या एक ही परम आत्मा के अनेक हिस्से हैं जैसा कि कई लोगों की मान्यता है कि (i) एक समुन्द्र की बूंद की तरह है (ii) एक ब्लॉक के टुकड़े हैं (iii) सोने के विभिन्न आभूषण हैं (iv) अग्नि की अनेक चिंगारी की तरह हैं आदि-आदि ।

(6) आत्मा का मूल अथवा मुख्य स्वभाव क्या है ?

(7) क्या 'आत्मा' कर्ता है या भोक्ता है ? अथवा यह केवल साक्षी होकर कर्म करता व देखता है तथा कर्मों का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ?

(8) क्या आत्मा अनन्तवा अति सूक्ष्म है ? क्या इसका कोई रूप अथवा साईज़ है ?

(9) क्या परमात्मा ने आत्मा को रचा था अथवा यह अनादि है ? क्या यह विनाशी वस्तु है और इसका अन्त हो जाता है अथवा यह शाश्वत है ?

(10) क्या आत्माओं के अलग-अलग प्रकार या सैक्शन हैं या सभी आत्माएं एक जैसी हैं ? क्या मनुष्य की आत्मा अन्य पशु-पक्षी या जानवरों की आत्मा से भिन्न है ?

(11) क्या आत्मा पुर्जन्म लेती हैं ? इसकी पुष्टि के लिये क्या प्रमाण हैं ?

(12) क्या आत्माएं किसी अन्य लोक से आती हैं ? और वापिस उसी लोक में जाती हैं ? या आत्मा सदा से इस लोक में विद्यमान हैं और इसी दुनिया में सूक्ष्म या स्थूल रूप में सदा रहेंगी ? क्या आत्मा में चेतनता या अन्य गुण शरीर में प्रवेश करने पर प्रत्यक्ष होते हैं अथवा सदा विद्यमान रहते हैं ?

(13) विभिन्न आत्माओं के कर्मों व गुणों में अन्तर किस कारण से है ?

(14) क्या आत्मा बिना शरीर के देख, सुन और महसूस कर सकती है ?

(15) आत्मा और चेतनता का क्या सम्बन्ध है ? जब आत्मा शरीर में है तो उसकी चेतनता की अवस्था क्या रहती है ? और उसकी अलग-अलग अवस्थाओं का कारण क्या है ?

(16) चेतन, अचेतन और सुषुप्त मन क्या है ?

(17) क्या अन्य लोकों में आत्माएं हैं ?

(18) क्या आत्मा को देखा जा सकता है ?

(19) क्या सत्व, रजो व तमो गुण से आत्मा प्रभावित होती है ?

परमात्मा अथवा परम+आत्मा

(1) क्या परमात्मा का कोई नाम व रूप है ? क्या परमात्मा एक है या अनेक ? वह किस भाव से एक हैं ?

(2) परमात्मा की विशेषताएं क्या हैं ?

(3) क्या 'परमात्मा है ?' इसके लिये क्या व्याख्या दी जा सकती है ?

(4) क्या परमात्मा सूक्ष्म शक्ति है या साकार देहधारी है ? क्या वह सर्वव्यापी है ? क्या उसका कोई धाम है ? परमात्मा सर्वव्यापी है—इसके बारे में जो अनेक उदाहरण या व्याख्या दी जाती है—उसको कैसे उचित समझा जाये ? कैसे समझा जाये कि परमात्मा एक है और अति सूक्ष्म हैं ?

(5) क्या परमात्मा साकार है या निराकार है ?

(6) परमात्मा के मुख्य गुण कौन-से हैं ? वे अन्य आत्माओं से कैसे भिन्न हैं ?

(7) परमात्मा के क्या कर्त्तव्य हैं ? वह कब और कैसे ये कार्य करता है ? उसके ये कर्म अन्य आत्माओं से कैसे अलग हैं ?

(8) क्या परमात्मा के गुणों या कर्त्तव्यों से यह सिद्ध होता है कि वह ये कार्य एक ही समय में करता हैं या सृष्टि चक्र में हर समय करता रहता है ? क्या परमात्मा मनुष्यों के कर्त्तव्य (या इतिहास) में दखल देता हैं अथवा वह केवल साक्षी होकर इस ड्रॉमा को देखता रहता हैं ?

(9) परमात्मा के तीन कर्त्तव्यों 'स्थापना, पालना और विनाश' का क्या अर्थ है ? एक निराकार हस्ती साकार दुनिया की रचना कैसे कर सकता है और जो सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम, दया का सागर है वह इस प्रकार की दुःख अशान्ति व रोग-शोक से भरपूर सृष्टि की रचना कैसे कर सकता है ? अगर परमात्मा ने यह सृष्टि नहीं रची तो यह प्रकृति नियमानुसार सतत कैसे चलती रहती हैं ?

(10) अगर परमात्मा सर्वशक्तिवान, ज्ञान का सागर और सर्वज्ञ है तो इस सृष्टि में बुराईयां क्यों हैं ? क्या बुराईयों के होने से यह सिद्ध नहीं होता है कि परमात्मा की शक्ति सीमित है अथवा उसने यह सृष्टि रची ही नहीं ?

(11) एक परमात्मा के अलावा क्या अन्य सूक्ष्म देवताएं अथवा फरिश्ते भी हैं ? वे क्या हैं ? उनके क्या

कर्त्तव्य अथवा उनका इस सृष्टि में क्या महत्वपूर्ण स्थान हैं ?

(12) क्या सूर्य, चन्द्रमा आदि देवता हैं ? क्या इनमें कोई देवता का निवास है ?

(13) आत्मा का परमात्मा से क्या सम्बन्ध है ?

(14) परमात्मा प्यार का सागर के साथ-साथ न्यायकारी कैसे हो सकता है ?

(15) परमात्मा देहधारी रूप में कैसे अवतरित होता है ? क्या वह माता के गर्भ से जन्म लेता है ?

(16) क्या एक कल्प में परमात्मा अनेक बार इस सृष्टि पर जन्म लेता अथवा अवतरित होता है ? अगर वह कल्प में केवल एक ही बार अवतरित होता है तो किस समय ? वह उसी समय क्यों अवतरित होता है ?

(17) परमात्मा 'दिव्य जन्म' लेता है इस कथन का क्या अर्थ है ? इसके कर्म 'दिव्य' हैं इससे क्या अभिप्राय है ?

(18) क्या जब परमात्मा अवतरित होते हैं तो कोई चमत्कार दिखाते हैं ? जब वह अवतरित होते है तो कोई मनुष्य कैसे पहचान सकता हैं ? क्या आसानी-से मनुष्य उसे पहचान सकते हैं ? अगर नहीं तो उसके क्या कारण हैं ?

(19) परमात्मा हमारा पिता होने के नाते क्या वरसा देता है जब वह अवतरित होते हैं ?

(20) क्या परमात्मा 'महान्विभूति' हैं अथवा वह महान् बनता है ? क्या आत्मा कभी भी परमात्मा बन सकती हैं ? क्या आत्मा परमात्मा में लीन होती हैं ?

संसार अथवा विश्व

(1) क्या संसार एक स्वप्नमात्र है अथवा वास्तविकता हैं ? क्या ये सिद्धान्त अथवा मत यथार्थ है कि संसार केवल स्वप्नमात्र अथवा मिथ्या है और वास्तव में यह संसार बना ही नहीं ?

(2) क्या मानव इतिहास अथवा ड्रॉमा एक सुनिश्चित, सुनियोजित ढंग से रचा (बनाया) गया है अथवा इसकी घटनाओं का एक-दो से कोई सम्बन्ध नहीं है ? क्या विश्व एक रंगमंच हैं जहां आत्माएं अपना-अपना पार्ट बजाती हैं अथवा इसमें किसी भी आत्मा का पार्ट निश्चित नहीं है और कि सदाकाल से ही यह सृष्टि दुःखों का घर रहा है ?

(3) अगर यह विश्व एक नॉटक है तो इसे किसने बनाया और किसने हरेक आत्मा को अलग-अलग पार्ट दिया ? किस आधार पर उसने ये पार्ट दिये ? अगर उसने किसी को भी पार्ट नहीं दिया तो सभी आत्माएं एक सुनिश्चित ढंग से अपना-अपना पार्ट कैसे बजाती रहती हैं ?

(4) क्या मानव के इतिहास को किन्हीं काल व युगों में बांटा जा सकता है ? या नहीं बांटा जा सकता ? अगर यह बांटा जा सकता है तो वे युग कौन-से हैं और उनकी क्या-क्या विशेषताएं हैं और अब हम किस युग से गुज़र रहे हैं ?

(5) यदि इस सृष्टि की घटनाएं पहले से फिक्स हैं क्या मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है ? अगर मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र नहीं हैं और हरेक घटना पूर्वनिश्चित ड्रॉमानुसार अवश्य घटती ही है, फिर निर्दोष मानव सज़ा का भागी क्यों बनता है ? क्या ये सज़ाएं भी केवल स्वप्नमात्र हैं अथवा वास्तव में भोगनी पड़ती हैं ? अगर ये वास्तविक हैं तो कौन इसके लिये ज़िम्मेवार हैं जबकि मनुष्य द्वारा इन्हें फिक्स नहीं किया गया है ?

(6) क्या विश्व एक ही है अथवा अनेक हैं ? क्या तीन लोक होते हैं ? क्या ऐसा भी कोई लोक है जहां आत्माएं मुक्त व निराकारी अवस्था में वास करती हैं ? क्या परमात्मा इस दुनिया कई पार रहता है ? परमधाम क्या है ? 'ब्रह्मलोक' अथवा 'निर्वाण लोक' किसे कहते हैं ? क्या शरीर छोड़ने के बाद आत्माएं हर बार 'परमधाम' लौट जाती हैं अथवा अच्छे कर्मों से स्वयं वहां जा सकती हैं अथवा केवल परमात्मा ही आत्माओं को वापिस अपने घर 'परमधाम' ले जा सकता है ?

(7) इन लोकों की अलग-अलग विशेषताएं क्या हैं ? क्या इस मनुष्य लोक की तरह अन्य लोकों को भी देखा जा सकता है ?

(8) सतो, रजो, तमो गुण क्या हैं ? इनकी अलग-अलग विशेषताएं क्या हैं ?

(9) क्या सतो, रजो, तमों गुण संसार में एकसाथ होते हैं अथवा विश्व नॉटक में उनका अलग-अलग समय पर अपना-अपना महत्त्व होता है ?

(10) आत्माएं इस संसार में क्यों आती हैं ? उसको यहां आने पर क्या प्राप्ति या इच्छाएं पूर्ण होती हैं ?

(11) क्या एक चक्र के बाद विश्व पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है ? अगर हां तो कितने सूर्य वर्षों के बाद ऐसा होता है ? और अगर इसका पूर्ण रीति से विनाश नहीं होता है तो फिर यह एक युग से दूसरे युग में कैसे परिवर्तित होता है अथवा अपनी मूल स्थिति (अवस्था) में कैसे आता है ?

(12) सांसारिक पदार्थों की ओर आकर्षण क्यों होता है ? और यह जानते हुए भी कि भौतिक पदार्थों का सुख क्षण भंगुर व विनाशी हैं फिर भी मनुष्य उनके पीछे क्यों भागता है ?

(13) स्वर्ग और नर्क क्या हैं ? क्या वे इस संसार से भिन्न हैं ? क्या स्वर्ग ऊपर और नर्क नीचे है ? स्वर्ग में देवताओं की स्थिति कैसी होती है और वहां का आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, शैक्षणिक विधान क्या होता है और उनकी धार्मिक भावनाएं कैसी होती हैं ? क्या वे शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं और दिव्य गुण सम्पन्न होते हैं अथवा उनमें भी विकार अथवा अवगुण होते हैं ? क्या उन्हें कभी दुःख, रोग-शोक होता हैं ? क्या वहां भी राक्षस अथवा असुर होते हैं ?

(14) क्या यह संसार भौतिक कारणों से बना अथवा पहले आध्यात्मिक प्रधान था और केवल एक ही संसार है अथवा अनेक भागों में बंटा हुआ है । और इस कहावत के अनुसार कि परमात्मा एक था लेकिन उसने अनेक रूप धारण किये' अनेक संसार बन गये ।

(15) क्या यह संसार फूलों के बगीचे की तरह है, कांटों का जंगल है, एक सरॉय है, जेल है, नॉटक खेलने का स्थान है, खेल का मैदान है, इम्तिहान देने का हाल है, एक लेबोरेटरी है, ट्रेनिंग ग्राउंड है, कर्मों के बीज बोने का खेत है तथा इसके फल भोगने का स्थान है अथवा अलग व्यक्ति के लिये अलग स्थान हैं या अलग-अलग समय पर यह अलग-अलग प्रकार का स्थान है ?

(16) अगर संसार एक नॉटक है तो क्या दुःखान्त है या सुखान्त है ?

(17) क्या यह संसार आपस में मेल-मिलाप से रहने के लिये है अथवा आपसी भेदभाव के लिये है ? क्या यहां एकता में अनेकता है या सभी प्रकार के भाव समय-प्रति-समय होते रहते हैं ?

(18) कृल्प्-वृक्ष नामक वृक्ष की तरह यह संसार कैसे बढ़ता रहता है ? और इसकी तुलना चक्र, सृष्टि चक्र से क्यों करते हैं ? परमात्मा इसका बीज रूप कैसे है ?

(19) क्या संसार का नियम "ताकत ही नियम है" या अन्य किसी नियम से यह संसार चलता है ?

(20) इस कहावत का क्या अर्थ हैं ? "इस संसार में रहते हुए इससे अनासक्त रहना है ।"

कर्म

(1) कर्म का क्या नियम है ? क्या यह 'न्यूटन' के 'लॉ ऑफ मोशन' की तरह है ? क्या इसके नियम शाश्वत और विश्व व्यापी हैं ?

(2) कर्म, अकर्म, सुकर्म, विकर्म में क्या अन्तर है ? संचित कर्म, प्रालब्ध कर्म किसे कहते हैं ? क्या यह अन्तर स्थाई है अथवा इसके लिये कोई पक्की रेखा (लकीर) नहीं है ?

(3) 'कर्त्तव्य' का क्या अर्थ है ? किसने यह कर्त्तव्य जिम्मे लगाया है ? क्या यह आवश्यक है कि इसे नैतिक कर्त्तव्य समझना चाहिए अथवा इनकी ओर ध्यान ही नहीं देना चाहिए क्योंकि ये बन्धन में बांधनेवाले हैं ?

(4) क्या सभी कर्म बन्धन में बांधनेवाले हैं ? क्या बन्धनों को विशेष कर्मों द्वारा काटा जा सकता है ?

(5) क्या 'कर्मों के सिद्धान्त' के लिये परमात्मा या अन्य कोई शक्ति जिम्मेवार हैं ? क्या कोई भी शक्ति नहीं देखती है अथवा कर्मों का फल प्रदान नहीं करती हैं ? क्या कर्म करनेवाला स्वयं ही उसका फल भोगता अथवा अनुभव करता है ?

(6) 'संस्कार' क्या है ? इसका असर विचार और कर्मों पर कैसे पड़ता है ? क्या कर्मों से संस्कार बदलते अथवा सुधरते हैं अथवा संस्कार कर्मों को बदलते हैं अथवा ये

दोनों एक-दो को प्रभावित करते रहते हैं ?

(7) कर्म करते हुए क्या कोई अपने-आपको अनासक्त रख सकता है ? यह कैसे हो सकता है ?

(8) क्या पिछले कर्मों का खाता समाप्त किया जा सकता है ? अगर हां तो किस प्रकार ? हमे कैसे मालूम हो कि आत्मा पर से हमारे पिछले कर्मों का बोझा समाप्त हुआ है अथवा नहीं ?

(9) क्योंकि कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है—इसलिए हमें कर्म करने चाहिएं या उससे बचना चाहिए ? क्या कर्मों का पूर्ण संन्यास संभव है ? वास्तविक संन्यास क्या है ?

(10) क्या कोई विशेष प्रकार के कर्म हैं जिनका विशेष महत्त्व है ? यज्ञ करना, यात्रा, अथवा शास्त्रों का अध्ययन करने को विशेष प्रकार के कर्मों का दर्जा कैसे दिया जा सकता है ? यह कैसे मालूम हो कि पवित्र कर्मों द्वारा भविष्य में खुशी मिलेगी और दान-पुन्य का भविष्य में पुरस्कार मिलेगा ?

(11) मनुष्य के कर्म परमात्मा से कैसे भिन्न हैं ? और अपने जीवन में परमात्मा का कैसे आचरण कर सकता है ?

अवस्थाएं अथवा स्थितियां

(1) मुक्ति क्या है ? क्या आत्मा वास्तव में बंधन में है ? या केवल अज्ञानता वश अपने को बन्धन में समझती है ?

(2) 'मुक्ति' कैसे प्राप्त हो सकती है ? क्या आत्मा अपने पुरुषार्थ से, बिना परमात्मा की सहायता के या निर्देशन के, इस अवस्था को प्राप्त कर सकती है ? क्या यह कभी भी प्राप्त नहीं की जा सकती है ?

(3) 'जीवनमुक्ति' किसे कहते हैं ? अतीन्द्रिय सुख, आनन्द अथवा खुशी की अवस्था किसे कहते हैं ? यह अवस्था कैसे प्राप्त होती है ?

(4) 'मरजीवा' का क्या अर्थ है ? 'विदेह', अन्तःवाहक अथवा कर्मातीत अवस्था किसे कहते हैं ? इन्हें कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?

(5) 'जीवन-बंध' अवस्था क्या है ? बन्धनों का कारण क्या है ? और इन्हें काटकर बन्धन मुक्त कैसे बन सकते हैं ?

(6) 'अन्तर्मुखी अवस्था' किसे कहते हैं ? 'बाहरमुखी' अवस्था, 'योग युक्त अवस्था', 'देह-अभिमानी' अवस्था से क्या अभिप्राय है ?

(7) क्या स्वप्न अवस्था से मनुष्य के 'नैतिक' अवस्था का आभास होता है ? क्या स्वप्न अवस्था में किये गये कर्मों का फल भी भोगना पड़ता है ? □

"स्वर्णिम विचार से आ रहा...स्वर्णिम संसार"

□ब्रह्माकुमार 'प्रकाश' (भोपाल)

स्वर्णिम विचार से आ रहा...स्वर्णिम संसार।
स्वर्ण जयन्ती लेकर आयी खुशियों का अंबार।।

स्थापना के वर्ष पचास पूरे होने आये।
मुस्काए हर मन में सपने आशाओं ने दीप जलाए।।

चमक उठा अब सुख का सूरज शांति से हर आंगन महकाए।
शिव की बस आस यही है, हर आत्मा अब सम्पूर्ण बन जाए।।

बाट जोहते खड़े ब्रहमा भी खोलने सतयुग के द्वार।
स्वर्णिम विचार से आ रहा... स्वर्णिम संसार।।

वत्सों ब्रहमा के सपनों को आओ हम साकार करें।
पचास सुनहले रत्नों से हर आत्मा का श्रृंगार करें।।

कैसे हो कल्याण विश्व का नित यही विचार करें।
तन-मन-धन देकर अपना, जगत का उद्धार करें।।

हो दृष्टि में शक्ति इतनी, भक्त आत्माएं हो जाएं बलिहार।
स्वर्णिम विचार से आ रहा...स्वर्णिम संसार।।

वंचित कोई न रह जाए बस यही लक्ष्य हमारा हो।
सुख चैन की राह मिल जाए उसे हर मानव जो थका-हारा हो।।

एकता और एकाग्रता के सूत्र से स्वर्ण जयन्ती सफल होगी।
योगी बन सहयोगी बनने से हर समस्या हल होगी।।

शुभ भावना का दान देकर करना है जन-जन का उपकार।
स्वर्णिम इस विचार से आ रहा...स्वर्णिम संसार।।

□□□ओमशांति□□□

वैज्ञानिक अनुसंधान— मृत्यु से परे की खोज

□डॉ. गिरिश पटेल (बम्बई)

हृदय रोग विशेषज्ञ (Cardiologist) डॉक्टर नोरमन सैन्ड (Dr. Norman Sand) को, एक कार दुर्घटना में घायल होने के पश्चात् पोर्टलैण्ड, ओरगन् (Portland, Orogon) शहर के अस्पताल में लाया गया। सर्जरी (Surgery) के पश्चात् अगली सुबह 1 बजे उनको मृत घोषित किया गया। तत्पश्चात् उनको ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि अपने शरीर से बाहर वह एक असीम प्रकाश में पहुंच गये हों।

उन्होंने डॉक्टरों को अपनी मृत देह को एक हरे प्लास्टिक के थैले में डालने की तैयारी करते हुए देखा। लेकिन अचानक ही स्वाभाविक श्वास क्रिया के प्रारम्भ होने पर वह कोमा (Coma) में रहे, फिर उसके बाद उनको याद है जैसे कि डॉक्टर हर निश्चित समय के पश्चात् उनके कमरे में आते थे तथा एक पिन से, जो कि एक पैन्सील में लगे रबर (Erasee) के साथ लगा हुआ था, यह जांच करते थे कि उनके शरीर में कुछ प्रतिक्रिया है या नहीं।

इस प्रकार की घटनाएं कोई नई नहीं हैं। परन्तु मुख्य बात तो यह है कि वैज्ञानिक, डॉक्टर, सर्जन इन बातों को रूचिपूर्वक सुनने को तैयार हों तथा वैज्ञानिक खोज की दृष्टि से इनका निरीक्षण करें। आज, वह वैज्ञानिक जो इन कहानियों को एक कल्पना मात्र समझते थे इनकी सत्यता पर उनका विश्वास बढ़ता जा रहा है।

डॉक्टरों की जांच

वर्जीनिया विश्वविद्यालय (University of Virginia) मनोवैज्ञानिक (Psychiatrist) डॉक्टर इयान सटेवेनसन (Dr. Ian Stevenson) ने मनोविज्ञान के प्रारम्भकर्ता विलियम जेमस (William James) के सम्मान में रखी गई प्रतिस्पर्धा (Competition) में "जीवन' के लिए प्रमाण" (Evidence of Survival) विषय पर एक लेख प्रस्तुत किया था। जिसमें उन्होंने अधिकांश व्यक्तियों को इस बात पर सोचने के लिए मजबूर कर दिया था कि जीवन है। उन्होंने अपने इस लेख में 1600 से अधिक पुर्नजन्म की घटनाओं के बारे में विस्तृत विवरण दिया था। अभी कुछ समय पहले प्रसिद्ध पत्रिका ज़रनल ऑफ नरवस एण्ड मेन्टल डिज़ीज़ (Journal of Nervous and Mental Disease) में उन्होंने निष्कर्ष रूप में कहा कि मृत्यु के बाद मनुष्य का जीवित रहना, मानव जीवन के लिए बहुत बड़ा प्रमाण है। ...अवश्य ही मृत्यु के बाद मानव जीवन है।

डॉक्टर एलिज़ाबेथ कुबलर रोस ने ऐसे कई व्यक्तियों के अनुभवों का निरीक्षण किया है जिनकी बीमारी के कारण मृत्यु हुई हो।

नास्तिकों के तर्क

अटलान्टा, यू.एस.ए. (Atlanta, U.S.A.) के एमोरी विश्वविद्यालय (Emory University) में हृदय रोग विज्ञान के सहायक प्रोफेसर डॉ. माईकल साबोम (Dr. Michael Sabom) ने जब डॉ. मोदी (Dr. Mody) की किताब पहली बार पड़ी तब वह एक नास्तिक थे। लेकिन उन्होंने तथा एक मनोवैज्ञानिक समाज-सेवक ने मिलकर 120 से भी अधिक ऐसी घटनाओं का निरीक्षण किया जिसमें रोगी मृत्यु के नज़दीक थे। सबसे रुचिकर बात उनके लिये थी—इन रोगियों का शरीर के बाहर का अनुभव—जिसमें उन्होंने अपने बेहोश शरीर को यहीं छोड़ा तथा एक-दूसरे व्यूहा (Ventage Point) से उसको देखा! इन सब घटनाओं के विस्तृत निरीक्षण के पश्चात् उन्होंने कहा, "मैंने देखा कि कुछ रोगियों ने बिल्कुल सही क्रम में यह बताया कि ऑपरेटिंग टेबल (Operation table) पर उनके शरीर के साथ क्या-क्या हुआ! एक व्यक्ति ने तो यह भी बताया कि कैसे वह अपने शरीर से ऊपर गया और डॉक्टरों को अपने शरीर का ऑपरेशन (Operation) करते हुए देखा। उसने ऑपरेशन में इस्तेमाल किये हुये साधनों के बारे में भी बताया। यह भी

बताया कि उसका दिल कैसा दिखाई पड़ता था तथा ऑपरेशन की पद्धति भी बताई । मैं हैरान रह गया क्योंकि उसने अपने जीवन में कभी भी डॉक्टरी ज्ञान की प्राप्ति नहीं की थी । एक दूसरी घटना में एक व्यक्ति का दिल4–5 मिनट के लिए बन्द हो गया था और उस दौरान क्या हुआ, सब-कुछ उसने वैसे ही विवरण दिया । यह मेरे लिये सबसे मज़बूत प्रमाण है कि यह कोई मन की कल्पना या भ्रम नहीं था । यहां जो भी कुछ हो रहा है उसको परम्परागत रीति से नहीं बताया जा सकता ।

परन्तु कुछ नास्तिक व्यक्ति अभी भी ऐसा विश्वास करते हैं कि यदि ये मानसिक भ्रम या कल्पना नहीं तो या तो ये किसी दवा का या फिर धार्मिक विश्वासों का प्रभाव है ।

कनैक्टिकट विश्वविद्यालय (University of Connecticut) के मनोवैज्ञानिक प्रोफ़ेसर केनैथ रिंग (Prof. Kenneth Ring) ऐसे व्यक्तियों के समूह को, उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर उसको परखने के लिए तैयार किया, जो मृत्यु के नज़दीक थे ।

अपनी इस खोज के दौरान उन्होंने देखा कि उनके इस समूह में अलग-अलग आयु, शिक्षा स्तर, स्वभाव के व्यक्तियों का एक-सा ही अनुभव था । वास्तव में उनमें से कई तो धर्म में विश्वास ही नहीं रखते थे । व कईयों ने तो कभी किसी केफी पदार्थ का भी सेवन नहीं किया था । प्रोफेसर रिंग का तो कहना है कि एनेसंथेसिया (Anaesthesia) जैसी दवाओं का इस प्रकार का कोई असर नहीं होता । बल्कि ये इन दवाओं के प्रभाव से तो मनुष्य अपने मृत्यु के अनुभव को और ही भूल जाता है ।

डेनवर यू.एस.ए. (Denver, U.S.A.) में सैंट ल्यूक हास्पीटल (St. Luke Hospital) के कारडियो वैस्कयूलर सर्विसिस (Cardio Vascular Services) के डॉरैक्टर (Director) डॉक्टर फ्रेड स्कून मेकर (Dr. Fred Sccoon Maker) ने ऐसे 2300 रोगियों का निरीक्षण किया जो मृत्यु के नजदीक थे । डॉक्टर फ्रेड ने ऐसे कई रोगियों के जीवन सम्बन्धित चिन्हों को जानने के लिए कई नये साधनों का उपयोग किया है । इन सबका रिकॉर्ड दर्शाता है कि दिमाग को दी गई ऑक्सीजन में कोई कमी नहीं थी । बहुत से किस्सों में दिमागी लहरें (Brain Waves) 30 मिनट से 3 घंटे तक या तो सीधी ही थी या फिर उनका अस्तित्व ही नहीं था जिससे यह सिद्ध होता है कि जो भी अनुभव उस रोगी को होता है वह किसी भी प्रकार की दिमागी अस्वाभाविकता नहीं है ।

जीवन क्या है?

इन सब व्यक्तिगत खोजों के साथ-साथ कुछ पाद्धार्थिक खोजें भी की गईं जिनसे यह अनुभव होता है कि जीवन केवल प्राकृतिक तत्वों का ही बना है यह सिद्धान्त सभी अपूर्ता है । प्रसिद्ध कैनेडियन (Canadian) न्यूरो सर्जन (Neuro Surgeon) बेलडर पेनफील्ड (Wilder penfield) ने 30 साल के अनुसंधानों के पश्चात् यह ढूंढ निकाला है कि मन को मस्तिष्क की प्रक्रिया (Neoronol Actions) के आधार पर समझाना एक असम्भव बात है । ...मन को उसके अपने ही तत्वों के आधार पर जाना जा सकता है । ...Penfield, The mystery of mind, 1976) इसी प्रकार प्रसिद्ध दिमागी खोज करनेवाले रोज़र स्पेरी (Roger Sparry) ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि चेतंन्यता, दिमाग में रहनेवाले भौतिक तत्वों से कुछ अलग चीज है ।

शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण विचार एक प्रसिद्ध न्यूरो वैज्ञानिक (Neuro-Scientist) ई.सी. एक्लेस (E.C. Eccles) से मिलता है । उन्होंने अपनी किताब "द सेल्फ एण्ड इट्स ब्रेन" (The self and its brain) में व्यवस्थित रीति में बताया है कि दिमागी सरंचना, मानसिक क्रिया को बताने में काफी नहीं है ।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सभी प्रकार की व्यक्तिगत एवम् पाद्धार्थिक खोजों से यही सिद्ध होता है कि जीवन केवल भौतिक तत्वों का नहीं बना है । वास्तव में जीवन एक अभौतिक एवम् चैतन्य शक्ति है जो कि भौतिक शरीर की मृत्यु के पश्चात् भी जीवित रहती है । इस चैतन्य शक्ति को समझना बहुत महत्वपूर्ण है । क्योंकि जब व्यक्ति यह अनुभव कर लेगा कि वह एक चैतन्य शक्ति है इसके विचार, व्यवहार में परिवर्तन आ जायेंगा । उसको अपने शरीर के अस्थायी स्वभाव का मालूम पड़ेगा जो कि उस चैतन्य शक्ति का एक वस्त्र या वाहन है । □

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ६/१६ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd No 10563/65-D, (E)—70